UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178907
UNIVERSAL
LIBRARY

पकौड़ी साह जिंदाबाद !

[शिष्ट हास्य का उपन्यास]

लेखक

विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

प्रकाशक

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल

कॉ० महेन्द्र, पटना

प्रकाशक
अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल
पो० महेन्द्र , पटना

प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ
सर्वाधिकार लेखक के अधीन
मूल्य ~~१॥)~~

मुद्रक
देवकुमार मिश्र
हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना

मित्रवर,

स्वर्गीय ईशदत्त शास्त्री 'अीश'

(साहित्य-दर्शनाचार्य, साहित्यरत्न)

की

पावन स्मृति को

भूमिका

किसी पुस्तक में भूमिका का वही स्थान है जो शरीर में नाक का। भूमिका इज्जत बचाने के लिए लिखाई जाती है, नाक सुन्दरता बढ़ाने के लिए बचाई जाती है। जिसकी नाक चली गयी, उसके पास कुछ नहीं रहा। नाक बचाने के लिए लोग जान हथेली पर ले लेते हैं। भूमिका अच्छी हो, इसके लिए पुस्तक-लेखक जमीन-आसमान एक कर देते हैं।

कुछ लोग भूमिका इसलिए भी लिखाते हैं कि वह बाजार में मुँह दिखा सकें। जब आदमी अधिक बदनाम हो जाता है तब वह समाज में मुँह दिखाने के लिए कुएँ खुदवाता है, तालाब खुदवाता है, धर्मशाला बनवाता है, जाति-बिरादरी को भोज देता है, उसी प्रकार जब लेखक समझता है कि उसका कर्तृत्व ठीक नहीं उतरा, उसने जो लिखा है उसे बदनाम करने के लिए काफी है, तब वह पुस्तक में भूमिका लिखाता है। भूमिका उसकी नामवरी बढ़ा देगी, इसका प्रत्येक लेखक को विश्वास होता है।

कुछ लोग भूमिका इसलिए भी लिखाते हैं कि भूमिका का रहना एक आदत की बात बन गयी है। आदमी की आदत है, स्वभाव है कि वह अपनी आदत जल्द नहीं छोड़ता। चूँकि दुनिया के तमाम लेखक भूमिका लिखाते हैं, इसलिए "मैं भी भूमिका लिखाकर पुस्तक प्रकाश में आने दूँगा।"

कुछ लोग भूमिका लिखाने के लिए भारी-भरकम आदमी ढूँढ़ते हैं। कुछ लोग, जिन्हें यह विश्वास हो चुका रहता है कि वे स्वतः भारी-भरकम आदमी हैं, स्वयं भूमिका लिख लेते हैं। स्वयं भूमिका लिख लेनेवाले पुस्तक-लेखक में आत्मबल अधिक होता है।

मेरा अपना विचार है कि किसी पुस्तक की भूमिका उसके पहले पृष्ठ पर लिखा उसका नाम है, यदि पुस्तक के नाम को आप भूमिका मानने के लिए न तैयार हों तो लेखक के नाम को पुस्तक की भूमिका मान लीजिये। लेखक का नाम पढ़कर मैं जान जाता हूँ कि पुस्तक में क्या है। मुझे भूमिका पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब इतना से भी कम न चले, तब भूमिका लिखानी ही पड़ेगी।

कवि की भूमिका उसकी कविता है, कहानीकार की भूमिका उसकी कहानी है, उपन्यासकार की भूमिका मोटा उपन्यास है। भूमिका के बदले प्रस्तावना कहिये, प्राक्कथन कहिये, विज्ञापन कहिये, सबका मतलब एक ही है कि नाक बचाने का प्रयत्न।

आपके हाथ में एक पुस्तक है। नाम है "पकौड़ी साह जिंदाबाद।" पुस्तक की भूमिका आप पढ़ रहे हैं। लेखक ने भूमिका लिखाई—किंतु आप यह न समझें कि आपके सम्मुख मुँह दिखाने के लिए उन्होंने भूमिका लिखायी। जी, नहीं, ऐसी बात नहीं। लेखक की नाक (इज्जत) हिन्दी के पाठकों से छिपी नहीं है। वे लेखक हैं, कवि हैं और उन्होंने 'पकौड़ी साह जिंदाबाद' जैसा उपन्यास लिखकर यह बतला दिया है कि वे उपन्यास-लेखक भी हैं। नाक बचाने का तो सवाल ही नहीं उठता। क्योंकि वे नये नहीं। नाक 'नये' बनाते हैं।

श्री विन्ध्याचल प्रसाद को भूमिका लिखाने की आदत भी नहीं, यह मैं जानता हूँ। उन्होंने जमीन-आसमान भी एक नहीं किया। सुनिये, भूमिका उन्होंने इसलिए लिखायी कि आप कहीं भूमिका न रहने से असन्तुष्ट न हो जायँ। लेखक को अपने पाठक की सबसे अधिक चिन्ता होती है। आप कलेजे पर हाथ रखकर बतलाइये तो, क्या आपको अपने लेखक की याद आती है, क्या आप उसकी स्थिति से परिचित रहने की चिन्ता में कुछ क्षण गुजारते हैं? मैं समझता हूँ—आप कहेंगे 'नहीं'। मगर लेखक आप जैसा नहीं होता।

'पकौड़ीसाह जिंदाबाद' शिष्ट हास्य का नमूना है। कहीं-कहीं पुस्तक के पन्ने इतने रोचक हो गये हैं कि पाठकों को बरबस अपनी याद आ जायगी। हिन्दी में 'पकौड़ी साह' जैसे चरित्र-चित्रण की आवश्यकता है। हमें गुप्तजी से ऐसी ही आशा थी। अब उनका अगला उपन्यास ऐसे किसी दूसरे चरित्र की भी शीघ्र सृष्टि करेगा, इसका मुझे विश्वास है। भाषा मुहावरों से लद गयी है। उर्दू की रवानी और चुहल भी यथेष्ट है।···इन शब्दों के साथ भूमिका समाप्त होती है।

भूमिका लिखनेवाला मैं भारी-भरकम आदमी नहीं, बहुत हलका-फुलका जन हूँ। मुझे विश्वास है कि गुप्तजी अपनी अगली पुस्तक की भूमिका के लिए किसी भारी-भरकम व्यक्ति को चुनेंगे। जय हिन्दी।

५४, ईश्वरगंगी, काशी
३० मई १९४८

कौतुक बनारसी
[शिवमूर्ति मिश्र 'शिव'

पकौड़ी साह की बात

दैनिक 'संसार' के होलिकांक (१९४५ ई०) में "पकौड़ी साह जिंदाबाद" का नारा लगा। २ जुलाई (१९४५) को साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में उनका "इन्साफ" हुआ। हास्यरस का सर्वश्रेष्ठ पाक्षिक 'तरंग' (बनारस) में उन्होंने "सेठ जी का दुशाला" पाया। तब उसने पटना के "योगी" में "जय जय सियाराम" कहते हुए पधार कर "पाँचों अँगुलियाँ घी में" डुबोयीं। अब वे "ऊँट के गले में बकरी" लटकाए और "मजीं गोविन्द की" कहते हुए अपने स्वागत के लिए निकल पड़े हैं।

पकौड़ी साह का दावा है, जो कोई इनका स्वागत करेगा; उनको वह गुदगुदायेंगे, घिघियाकर हँसायेंगे और कभी ठुमुक-ठुमुककर "ब्लैक मारकेट" की कहानियाँ सुनायेंगे ! "हाथ कंगन को आरसी क्या ?"

चनपटिया, चम्पारण —विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

पकौड़ी साह जिन्दाबाद

'पकौड़ीसाह' हमारे गाँव में "ब्लैक मार्केट" की तरह प्रसिद्ध हैं। इनके स्वर्गवासी पिता 'छकौड़ी साह' का नाम भी कम मशहूर नहीं। यदि सुबह कोई हमारे गाँव के किसी निवासी के सामने, 'छकौड़ी साह' कह दे तो सुननेवाले की आकृति देखने योग्य बन जायगी। सुननेवाला सात बार 'राम' का नाम उच्चारण कर कहने वाले को यदि कुछ खट्टा-मीठा नहीं सुनायेगा तो इतना अवश्य कह देगा "किस भले आदमी का नाम सुबह-सुबह मैंने सुना, आज कंजूस के नाम पर दिन भर उपवास तो करना ही पड़ेगा—अवश्य कुछ अनिष्ट होकर भी रहेगा।"

और इसमें सन्देह की गुँजाइश नहीं कि 'पकौड़ी साह' 'छकौड़ी साह' के लायक बेटा हैं। कई बातों में यह अपने बाप से भी आगे बढ़ गये हैं। सच पूछिए तो, "चीना (एक अन्न) के वंश में सपूत हुए माहीं" (चीना का भूना हुआ रूप) वाली

देहाती कहावत वास्तविक रूप में यही चरितार्थ करते हैं। इनके जीवन की कुछ मनोरंजक घटनाएँ ऐसी हैं जो हमारे ग्राम-वासियों को सदा याद रहती हैं। यदि किसी के स्मृति-पट पर किसी कारण धुँधली चादर पड़ गयी रहती है तो वह होली के शुभ अवसर पर भंग की तरंग, रंग के छींटे और अबीर के स्पर्श से टकराकर चमक उठती है।

फागुन के अल्हड़ दिन थे। "फागुन मस्त महीना की होरी" गाना भूलकर गाँव के कुछ नवयुवकों ने ग्राम में पुस्तकालय के अभाव को दूर करने के लिए कुछ धन एकत्रित करने का निश्चय किया।

पकौड़ी साह मकान के सामने चारपाई पर बैठे हुए अपने बाप के समय के हुक्के को गुड़गुड़ा रहे थे। साथ ही खाँय-खाँय खाँसते हुए—"आकथू-आकथू" के शब्दों के साथ थूकते भी जाते थे। सहसा इनकी दृष्टि पड़ी। गाँव के कुछ नवयुवक आते दिखाई पड़े। कई के सिर पर गाँधी टोपी देख उन्हें यह समझते देर न लगी कि निश्चय यह कुछ भीख माँगने ही आरहे हैं। किसी ने कहा है, "पटवारी की घोड़ी बिना जरूरत कहीं नहीं जाती।"

एक मिनट से भी कम समय में पकौड़ीसाह घर के भीतर घुस गये। दरवाजे पर नवयुवक पुकारने लगे "सावजी, सावजी"। पकौड़ी साह ने घर के भीतर अपने नौकर 'मिट्ठू' को सिखाया "जाकर कह दे, नहीं हैं।"

'मिट्ठू' ने बाहर निकलकर नवयुवकों से कहा "नहीं हैं।" नवयुवकों में से एक ने कहा, 'अभी तो चारपाई पर बैठे तम्बाकू पी रहे थे।' दूसरे ने मिट्ठू से कहा 'जाकर कह दे, हम हौआ नहीं हैं जो उनको निगल जायेंगे। वह परदे से बाहर निकल कर हमसे दो बातें कर लें।

मिट्ठू घर के भीतर चला गया।

नवयुवकों के बीच पकौड़ी साह की चर्चा चलने लगी।

"पूरा कंजूस है, जैसा बाप वैसा बेटा।"

"हम तो पहले ही कह चुके हैं, यह मक्खीचूस पुराना घाघ है। इसके आगे हाथ पसारना भैंस को गीत सुनाने के समान व्यर्थ होगा।"

"हाँ जी, पकौड़िया बैसाख का जोंक है।"

"घबड़ाओ नहीं, हम भी जोंक बन जायेंगे।"

"परन्तु जोंक में जोंक नहीं सटता।"

पकौड़ी साह किवाड़ की ओट से सब की बातें सुन रहे थे। रंग बेरंग नजर आया तो दोनों हाथों से अपना पेट दबाए कराहते हुए भीतर से निकले और चारपाई पर धम्म से बैठ गये।

एक ने पूछा, "क्यों साह जी यह क्या हो गया?"

"दर्द, बहुत जोर का दर्द।"

"दिल में या अँतड़ी में?"

"यहाँ, पेट में।"

"तो घबड़ाने की कोई बात नहीं। मैं अभी दूर किये देता

हूँ।" उसने पकौड़ी साह की तोंद पर हाथ रखकर दबाया और साथियों की ओर रहस्यपूर्ण संकेत कर चिल्लाया "पेट दर्द···"

उसके सभी साथी चिल्ला उठे—"वायकाट !'

"पकौड़ी साह···"

"जिन्दाबाद"

और कई बार इस नारा को दुहराया गया । शोर सुनकर वहाँ दर्शकों की अच्छी भीड़ जमा हो गयी। तोंद पर से हाथ हटाते हुए नवयुवक ने पूछा—"सावजी ! दर्द आराम हुआ ?"

पकौड़ी साह ने लम्बी साँस लेकर रुकते-रुकते कहा—"हाँ" सभी नवयुवकों के अधरों पर मुस्कुराहट फूटी; दर्शक हँसने लगे। पकौड़ी साह शंकित हो उठे, कहीं···?

और दूसरे ही क्षण वह फिर अपनी तोंद के अगल-बगल दोनों हाथों से दबाकर कराह उठे "ओह, भेंड़े की तरह हटकर फिर चोट किया।"

नवयुवकों में चंचलता आगयी।

"यह दर्द बड़ा दिल्लगीबाज है जो दुनियाँ भर में लायक सावजी को बार बार सताता है ।"

"देखिए तो, इसे दुनियाँ में कहीं जगह न मिली तो सावजी की तोंद में अपना घर बनाने की सूझी।"

"होली का समय है। शायद फागुन की मस्ती दर्द पर भी सवार हो गयी है।"

सब के सब खिलखिला उठे। परन्तु ६॥ बजे की सूई की तरह पकौड़ी साह मुँह लटकाए रहे।

एक नवयुवक ने साथियों और दर्शकों की ओर संकेत कर आगे बढ़ते हुए कहा·"अच्छा इस चाण्डाल दर्द को हम छठी का दूध अभी याद करा देते हैं कि फिर यह सावजी को कभी सताने का खयाल भी न करे।

और उसने पकौड़ी साह के मुख के सामने दोनों हाथों से चुटकियाँ बजाते हुए हर चट-चट आवाज के साथ छिः छिः छिः कहना आरम्भ किया। उसके सभी साथियों ने उसका अनुकरण किया।

दर्शक हँस-हँसकर नवयुवकों की तरह चुटकियाँ बजाते हुए कहने लगे 'जी-जी-जी-जी।'

अब पकौड़ी साह को पूर्ण विश्वास हो गया कि मेरी चाल को धूर्त लड़के ताड़ गये। फौरन् चिल्ला उठे, "दर्द काफूर हो गया।"

चुटकियों के शब्दों के साथ-साथ 'छी-छी' 'जी-जी' की पुकारें भी रुक गयीं। एक नवयुवक ने कहा, "साह जी, हम गाँव में पुस्तकालय स्थापित करना चाहते हैं। आप हमारी सहायता करें"

पकौड़ी साह को जैसे साँप ने सूँघ लिया।

"ऐं ? ना भैया, कभी ऐसा प्रयत्न न करना—मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ। गाँव में पुलिस का रहना खतरे से खाली नहीं। न जाने कब···।"

"सावजी, पुस्तकालय 'थाना' को नहीं कहते। जहाँ पुस्तकें

रहेंगी, पत्र-पत्रिकाएँ आयेंगी, उसे पुस्तकालय कहते हैं।"

"इसमें भला कौन-सा नफा है?"

"पुस्तकों और अखबारों के पढ़ने से अनेक लाभ हैं।"

"पढ़नेवाले सरकार की ओर से महीने में कितने रुपये पायेंगे?"

"रुपये नहीं खाक···।"

"खाक?"

नवयुवक झल्ला उठा, "हम जानना चाहते हैं, आप हमारी सहायता करेंगे या नहीं?"

उपस्थित जनता में कई गले से आवाजें निकलीं, "साबजी, इस पवित्र कार्य में जरूर मदद करनी चाहिये।"

पकौड़ीसाह दाँत दिखलाते हुए बोले, "क्यों नहीं? मुझे आप लोगों की बातों से भला कब इन्कार है? नीचे पंच, ऊपर परमेश्वर।"

"सहायता में क्या देते हैं?"

"आज मुनीब जी नहीं हैं। कल आइयेगा दे दूँगा।"

"परन्तु कितना?"

"आजकल व्यापार की चौपट हालत देखते ही हैं! हाथ भी तंग है। परन्तु आप लोग आगये और जब जबान से इतने पंचों के सामने निकल गया तो···कल ले जाइयेगा।"

"आखिर, क्या?"

"पाँच पैसे।"

"पाँच पैसे ?"

"एक···दो···तीन···चार···पाँच पैसे कुछ कम नहीं होते। आजकल समय पर·····"

"चिल्लू भर पानी में डूब मरिए। अपने पैसे अपने पास रखिए। आप का दिवाला निकल जायगा। सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।" क्रुद्ध हो नवयुवक आगे बढ़ गये। दर्शकों ने दाँत तले अंगुली दबाली। कई आवाजें निकलीं।

"असल सूम है।"

"लाखों रुपये तिजोरी में बन्द रखे हैं। मरने पर पकौड़िया सब सिर पर लाद कर ले जायगा ?"·····

·····पकौड़ी साह वहाँ से अपनी टाँग उठाये, घर में घुसे तो अपनी घरवाली की डाँट सुनकर रुके।

× × × ×

एक सप्ताह के बाद। पकौड़ी साह के सामने लम्बे केश और लम्बी दाढ़ीवाला एक भिखारी खड़ा था। पकौड़ीसाह ने डपटकर कहा, "सुबह-ही-सुबह आ मरा। बेशर्म कहीं का।"

भिखारी ने गिड़गिड़ाकर कहा—"सावजी !·····।"

सावजी बिगड़ उठे, "इन कंगालों के कारण तो घर से बाहर पैर रखना मुश्किल हो गया है। नाक में दम कर रखा है इन बदमाशों ने।"

भिखारी ने दबी हुई आवाज में कहा, "मैं कुछ माँगने नहीं आया हूँ।" और उसने भेद भरी नजर पकौड़ी साह पर डाली।

पकौड़ी साह विस्मय और हर्ष से कोहड़े के पात की तरह सिहर उठे। ओह, उनकी नजर आज किस भाँति फिसल गयी कि अपने हितैषी और भिखारी जैसे शत्रुओं में फर्क नहीं समझ सके। उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी और जब उन्हें विश्वास हो गया कि हमारी ओर किसी की नज़र नहीं है, उन्होंने भिखारी से संकेत किया भीतर घुस आओ!

···और भिखारी के बाद उन्होंने भी घर में घुसकर किवाड़े बन्द कर लिये। ऊपरी हिस्से के एक एकान्त कमरे में पहुँचकर भिखारी से बोले, "निकालो, कौन-कौन गहने हैं?"

"गहने! कैसे गहने!"—भिखारी चकित हुआ।

"एं"—साव जी विस्मय की अधिकता से अवाक् टकाटक उसका मुँह निहारने लगे।

इस भिखारी के जैसे वेष में कितने चोर चोरी के गहने, रुपये के चार आने में, पकौड़ी साह के हाथों बेच गए थे। इस भिखारी को उन्होंने चोर ही समझा था; किन्तु इसे समझने में इनसे गलती हो गयी।

भिखारी ने कुछ देर तक टाल-टुल के बाद कहा, "आप कसम खायें कि भेद न खोलेंगे तो कई हजार मैं तुरंत दे दूँ।"

पकौड़ी साह ने लगातार सात कसमें खायीं। तब उसने पाँच रुपये का एक नोट लेकर एक उतना ही लम्बा-चौड़ा सुफेद कागज उसके साथ लगाया और कुछ मिनट में पाँच रुपये का एक दूसरा नोट तैयार कर दिया। पकौड़ी साह चकित होकर

दूसरे नोट को उलट-पलट कर देखने लगे। परन्तु, कहीं कोई बाल बराबर भी फर्क नहीं।

वह लकपते हुए नीचे गये और सौ-सौ रुपये के पचास नोट लेकर लौट आए।

"भैया इसे भी दूना कर दो। इनाम में एक सौ रुपये ले लेना।"

भिखारी तमककर उठ खड़ा हुआ। "इसके बनाने में एक हजार की दवा खर्च हो जायगी। यह मुझसे न होगा। "नफा सुनावे चौगुना, और मूल में होवे हानि।"

पकौड़ी साह ने उसके पाँव पकड़ लिए। कुछ देर की खींचा-तानी के बाद नफे में आधा-आधी की शर्त्त पर दोनों में सुलह हो गयी।

भिखारी ने पचासों नोटों को उसी आकार के सुफेद कागज पर पानी-जैसी पतली कोई दवा लगाकर, एक के बाद एक तह देकर शीशे के दो टुकड़ों के बीच, लाल सूत से कस दिया।

पकौड़ी साह प्रसन्नता से कचौड़ी की तरह फूले हुए अपने लोलुप मन को सान्त्वना दे रहे थे। कोई हर्ज नहीं यदि पाँच हजार न होंगे—साढ़े सात हजार ही सही। "हाथ मैला न पाँव मैला।"

"आग की जरूरत है।" भिखारी ने कहा।

बस, कल्पना लोक से लौटकर वह उठ खड़े हुए। "अभी ले आया।" उनके जाते ही भिखारी ने नोटवाले शीशे को उठा

कर कमर के पास धोती में छिपा लिया और अपनी झोली से ठीक उसी प्रकार का लाल सूत से बँधा हुआ हुआ शीशा निकाल उसकी जगह रख दिया।

जब पकौड़ी साह कुछ कोयले और चिलम में आग लेकर पहुँचे, भिखारी ने अपनी झोली रखते हुए फुर्ती से कहा,—"एक चवन्नी दीजिए तो! पंसारी की दूकान से एक दवा दौड़कर ले आऊँ।"

पकौड़ी साह ने झट एक चवन्नी उसके हाथों में रख दी। वह शीघ्रता से नीचे उतरा, घर के बाहर हुआ; और फिर उनकी आकुल प्रतीक्षा देखने के लिए लौटकर नहीं आया।

दूसरे दिन होली थी। सबों ने आश्चर्य से देखा गाँव के सभी कंगालों के शरीर पर नये वस्त्र चमक रहे हैं, और भर पेट भोजन पाकर आज वे बहुत प्रसन्न दिखाई देते हैं।

उस दिन एक एकान्त कमरे में गुलाल में रँगे दो युवक झगड़ रहे थे। एक का कहना था, 'वेष बदलकर अपने को खतरे में डालकर, रुपये तू ले आया इसलिए पुस्तकालय तेरा ऋणी होगा। भिखमंगों को·····।"

दूसरा प्रतिवाद कर रहा था, "परन्तु रुपये तो पकौड़ी साह के हैं, पुस्तकालय उन्हीं के नाम से होना चाहिए·····।"

उस समय पकौड़ी साह के मुँह पर, उनके घर में, पानी छिड़का जा रहा था। वह बार-बार मूर्छित हो जाते थे।

इन्साफ

एक सप्ताह के बाद।

मिट्ठू ने आकर कहा "साहजी, दूकान के सामने कपड़ा खरीदनेवाले माटा की तरह जमा हुए हैं।"

पकौड़ीसाह घूरेल झाड़ कर उठ खड़े हुए।

उनको देखते ही कितने लोग बिलबिला उठे।

पकौड़ी साह के दिमाग के थरमामीटर में क्रोध का पारा अन्तिम सीमा पर पहुँच गया। वह भाड़ की तरह गरम होकर बोले "हटो, भागो, सिर मत खाओ।" उनके इन शब्दों ने जादू का काम किया। उनकी दूकान के सामने जमी भीड़ में खलबली मच गयी। कई आवाज एक साथ निकली—

"हमें चार नहीं तो दो धोतियाँ दे दीजिए।"

"और हमें पाँच साड़ियाँ नहीं तो एक ही साड़ी दे दीजिए।"

"दुहाई सावजी की! हमारी इज्जत रख लीजिए। कल ही हमारे घर शादी है और बाजार में एक धोती तक नहीं मिली।"

पकौड़ी साह झल्ला उठे, "तो क्या करूँ, धोती बन जाऊँ?"

सामने से क्लॉथ-इन्सपेक्टर आते दिखाई पड़े। पकौड़ी साह ने झुक कर प्रणाम करने के पश्चात् निवेदन किया "देखिए; हुजूर, गाँहक लोग बात से नहीं मानते, सिर पर चढ़ते जा रहे हैं।"

इन्सपेक्टर साहब ग्राहकों से बिगड़ कर बोले, "चलो,

भागो यहाँ से। कैसा गोलमाल मचा रखा है? नहीं भागने से हम अभी पुलिस बुलायेगा।"

कितने ग्राहक हैट देखकर और कितने पुलिस का नाम सुनकर वहाँ से खिसकने लगे। धीरे-धीरे भीड़ हट गयी। इन्सपेक्टर साहब ने पकौड़ी साह से कहा, "हम आपकी दूकान की जाँच करेगा।"

पकौड़ी साह दाँत दिखलाते हुए बोले, "हुजूर मालिक हैं, दूकान आपकी ही है। चलिये भीतर, देख लीजिए! हम औरों की तरह कपड़े छिपाकर नहीं रखते।" और इन्सपेक्टर के साथ दूकान के भीतर पैर रखते ही उन्होंने सौ रुपये का नोट बढ़ाते हुए कहा, "हुजूर इस महीने का···।"

इन्सपेक्टर ने सिर हिलाते हुए कहा, "ओऽऽ फिर वही एक सौ? मैंने पिछले महीने में क्या कहा था?"

"मुझे याद है हुजूर, परन्तु इस महीने में लाभ नहीं हुआ। हुजूर मालिक हैं।"

"आप बहुत नफा करता है—हम खूब जानता है। अच्छा इसबार हम रख लेता है। फिर दूसरे महीने में डेढ़ सौ से कम नहीं लेगा! समजा न!

"जी हाँ! हुजूर, आप मालिक हैं।"

तत्पश्चात् कुछ कपड़ों को उलटने-पुलटने के बाद पकौड़ी साह के स्टाक रजिस्टर पर हस्ताक्षर बनाकर इन्सपेक्टर साहब चले गए।

कुछ समय के बाद ही पकौड़ीसाह के एक परिचित ज़मींदार आये। 'जय-गोपाल' और 'राम-राम' के बाद पकौड़ी साह ने पूछा, "कहिये कुशल तो है ?"

ज़मींदार ने कहा, "आप लोगों की कृपा है। राम-इच्छा से इसी महीने के बीच हमारी लड़की की शादी है। कल तिलक का दिन है। अठारह हजार रुपये दहेज में जायेंगे—।"

"अठारह हजार ?" पकौड़ी साह ने विस्मय से आँखें फाड़-फाड़कर देखते हुए कहा।

"जी हाँ। राम-इच्छा से लड़का साधारण घर का नहीं है और एम० ए० पास है।"

"और अपनी बिटिया कहाँ तक पढ़ी है ?"

जमींदार ने सिर खुजलाते हुए कहा, "राम-इच्छा से हमारे खानदान में लड़कियों को पढ़ाना शुभ नहीं माना जाता। हमारे बड़े भैया की लड़की 'कान्ता' ने मिडिल तक शिक्षा पायी। राम-इच्छा से परिणाम यह हुआ कि शादी के दूसरे महीने उसे बिधवा बनना पड़ा। इसलिए फिर ऐसी गलती दुहराने के लिए हम तैयार नहीं हुए।"

"आपकी बिटिया की शादी है न ! जिसकी एक आँख....."

"हाँ, हाँ। परन्तु आपरेशन कराकर, पत्थर की आँख लगवा दी है। राम-इच्छा से मुझे कई जरूरी काम हैं। आप हमारी एक प्रार्थना स्वीकार कीजिए !"

"आप एक नहीं, हजार कहिये। मैं आपका मुँह नहीं रोक सकता।"

"अच्छा, राम-इच्छा से हमें एक जोड़ा "सेन गुप्ता धोती" और महीन साड़ी....." पकौड़ी साह उनके मुँह से बात छीन ले गये।

"बस-बस। यही छोड़कर चाहे जो भी सेवा हो, बिना संकोच किये ही कहिए। आप मालिक हैं।"

जमींदार की आशा खटाई में पड़ने लगी। मुँह सूख गया। दूकान की दीवारें उनकी आँखों में हिलती दिखाई पड़ीं। पकौड़ी साह का हाथ पकड़कर आजिजी से बोले, "अब हाथ पकड़ने की लाज रखिये।"

"यह मेरे बश से बाहर की बात है।"

"कहीं से ला दीजिए!"

"कहीं से क्या वह तो हमारी ही दूकान में है। परन्तु उसे मैं अपने साले के लिए ले आया हूँ।"

"आप हमसे ले लीजिए,...कहते हुए जमीन्दार ने अपनी जेब से एक सौ का एक नोट निकालकर पकौड़ी साह के आगे रख दिया।"

उसने सात बार 'राम' का नाम उच्चारण कर दुख प्रगट करते हुए कहा, "आप मुझे लोभी समझते हैं ? देना होगा तो बिना एक कौड़ी लाभ लिए भी दे सकता हूँ। परन्तु साले का भय लगता है। संसार कहता है, "सारी खुदाई एक तरफ-जोरू का भाई एक तरफ" फिर मैं संसार से अलग नहीं।"

जमींदार ने अंतिम उपाय काम में लाने की ठानी।

"आप सारी दुनियाँ को छोड़िए और राम-सुग्रीव की मित्रता को स्मरण कीजिए। साले को मना लीजियगा।" कहते हुए वह पकौड़ी साह का पाँव छूने को लपके।

"हाँ-हाँ-हाँ-हाँ" कहते हुए पकौड़ी साहने उन्हें ऐसा करने से रोक कर अपने साधु स्वभाव का परिचय दिया।

अन्त में इस वाक-युद्ध से हार मानकर पकौड़ी साह ने मन में प्रसन्न, प्रकट में मुँह लटकाए हुए, कैस-मेमों पर लिखे मूल्य बीस रुपये बारह आने के नीचे जमीन्दार से हस्ताक्षर बनवाये और एक सौ रुपए का नोट रखकर दस रुपये बारह आने की धोती और दस रुपये वाली एक साड़ी के साथ ५४) रुपये लौटा दिये।

पकौड़ी साह के उपकार का भारी बोझ लेकर, सन्तोष की साँस लेते हुए, जमींदार साहब बिदा हुए।

× × ×

दूसरे दिन × × × कचहरी में पकौड़ी साह कोई भूला हुआ नाम स्मरण कर रहे थे, "हाँ ऽऽऽऽ आ...आऽऽ आपरेशन बंगला। हाँ, आपरेशन बंगला।"

पास में ही एक नवयुवक सिनेमा के सचित्र विज्ञापन पर आँख गड़ाये खड़ा था। पकौड़ी साह ने नम्रतापूर्वक उससे प्रश्न किया, "बबुआ जी, आप आपरेशन बंगला जानते हैं?"

नवयुवक का ध्यान भंग नहीं हुआ। वह सारे संसार को भूलकर विज्ञप्ति पर छपे अक्षरों को पढ़ रहा था—"लाल हवेली।"

"पकौड़ी साह अपनी सफलता पर चिल्ला उठे, "लाल हवेली, में ?" इस बार नवयुवक का ध्यान टूटा। उसने पकौड़ी साह को नख से शिख तक देखकर कहा, "लाल हवेली' में 'सुरेन्द्र' के साथ 'नूरजहाँ' है।"

वह उत्सुकता से भर गये, "नूरजहाँ कौन ? वह गानेवाली ?"

नवयुवक ने अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा, "हाँ, भाई साहब, यों कहिये—स्वर की रानी। "खानदान" आपने देखा ? वाह कितना अच्छा गाती है ? सुनकर कलेजे पर साँप लोट जाता है ?" और नवयुवक अपने पास पकौड़ी साह के अतिरिक्त अन्य किसी को न देखकर गुनगुनाने लगा, "आँखों में दिल उतर गया···।"

पकौड़ी साह को कोई भूली हुई घटना याद आ गयी। उनकी आकृति का रंग गिरगिट की तरह बदलने लगा। वह भाड़ के चने की तरह भड़ककर बोले, "क्या खाक गाती है, उसकी आवाज घोड़ी की हिनहिनाहट-जैसी है।"

नवयुवक को "उल्टा चोर कोतवाल को डाटे" वाली नीति अच्छी न लगी। उसने आवेश में आकर बिना संकोच कह दिया, "घोंघा बसन्त ! तुम क्या जानो कि गाने का आनन्द कैसा होता है ? "क्या जाने झुलनी का मोल, बालम हल के जोतवैया।···

इस अपमान से पकौड़ी साह की नाक पर पसीना आ गया। वह रंग बेरंग देख नवयुवक को बड़बड़ाते हुए वहीं छोड़ चुपके से दस कदम आगे खिसक गये।

परन्तु इसमें पकौड़ी साह का अपराध न था। घटना इस प्रकार है:—

गाँव के सभ्य लोगों के विरोध को ठुकराते हुए उन्होंने अपने पुत्र के विवाह में 'नूरजहाँ' नामकी एक वेश्या को आमंत्रित किया था।

शादी के बाद दूसरी रात को महफिल में वह अपना कमाल दिखा रही थी। बारातियों में कई उससे गज़ल, दादरा, ठुमरी, कौव्वाली की फरमाइश कर अपनी आज्ञा की पूर्ति होते देख प्रसन्नता से गुब्बारे की तरह फूल रहे थे। पकौड़ी साह इस आनन्द से वंचित रहना उचित न समझ, नूरजहाँ से बोले "जरा एक भैरवी तो सुनाओ!"

उनके इन शब्दों ने उपस्थित मण्डली में हास्य का रस उड़ेल दिया। नूरजहाँ ने मुस्कुराते हुए कहा, "साव जी, यह भैरवी का समय नहीं है।"

अपनी आज्ञा की अवहेलना से क्रोधित होकर, पकौड़ी साह बोले, "वाह, समय क्यों नहीं है? गज़ल दादरा का समय है और 'भैरवी' का समय नहीं है? यह सब बहाना है। मैं उड़ती चिड़ियाँ को पहचानता हूँ और तुम मुझे सिखा रही हो।"

नूरजहाँ ने विनय पूर्ण स्वर में कहा, "सावजी भैरवी सुबह में गायी जाती है।" पकौड़ी साह के मुँह में लगाम कहाँ ? उनकी न रुकने वाली जुबान कैंची बन रही थी। "मैं एक नहीं सुनूँगा। भैरवी तुम्हें इस रात को गाना ही होगा।"

सभी लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। नूरजहाँ ने अपने समाजियों से कहा "बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद।"

उस समय पकौड़ी साह के दिमाग में अच्छी तरह घुस गया—"रण्डी किसकी मीत ?" तभी से वह नूरजहाँ के नाम से चिढ़ते हैं। परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम कि उनकी नूरजहाँ 'लाल हवेली' की नूरजहाँ नहीं है।

आपरेशन बंगला के अनुसंधान में वह दस बीस कदम और आगे बढ़े तब सामने से उनके परिचित एक वकील साहब आते दिखाई पड़े। वकील साहब की बुद्धि का लोहा पकौड़ी साह तीन महीने पहले से ही मान चुके थे। उनकी युक्ति से ही कपिलदेउआ चमार पर तेरह के बदले एक सौ तीस रुपये की डिग्री कराकर वसूल करने में समर्थ हुए थे। आज वही वकील साहब उनके सामने थे—इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती थी ? उन्होंने आगे बढ़, लम्बा प्रणाम कर प्रश्न किया, "आपरेशन बंगला किधर है ?"

वकील साहब कुछ सोचकर बोले, "आप अस्पताल जाना चाहते हैं ?"

"जी नहीं। कल चपरासी एक नोटिस देकर बोला—सेल टैक्स के हाकिम कल बही की जाँच करेंगे।"

"समझ गया, इन्सपेक्सन बंगला।"

"हाँ ऽऽऽऽ इन्ट्रेशन बंगला किधर है?"

वकील साहब उँगली से एक ओर संकेत करते हुए बोले, "वह देखिये, सामने कांटे से घिरा हुआ···जहाँ एक काले रंग का छोटा सा बोर्ड लगा है ·····।"

"बस-बस बूझ गया। आपका बेटा जिये। कहकर लपकते हुए पकौड़ी साह बंगला में पहुँचे। वहाँ अनेक व्यवसायी बही खाते के साथ बैठे हुए हाकिम के आने की प्रतीक्षा में समय की कड़ियाँ काट रहे थे।

कई घंटे गुजर गये। परन्तु, सेल टैक्स के आफिसर का दर्शन न मिला। व्यवसाइयों में असन्तोष फैलने लगा। एक ने कहा "नोटिस में १०॥ का समय है और तीन बज चुके हैं। हाकिम की दृष्टि में हमलोगों के समय का कुछ भी मूल्य नहीं मालूम पड़ता। उन्हें नहीं मालूम कि हमलोग भी हाड़-मास के बने हैं, हमको भी भूख और प्यास लगती है···।"

पकौड़ी साह की अँतड़ियाँ कुलबुला रही थीं। चलने के समय जलपान करने का उन्हें अवसर नहीं मिला था और बंगला को इस भय से नहीं छोड़ रहे थे कि जलपान करने के लिये आते-जाते घण्टों बीत जायेंगे, इसी बीच कहीं हाकिम की मोटर न आ जाय और सबसे पहले मेरी पुकार न हो

जाय। इस समय भूख की अग्नि प्रचण्ड होने के कारण उनके मन का क्रोध भी उफन रहा था। उन्होंने नाक फुलाकर कहा, "यदि किसी वस्तु का मूल्य भूल से भी एक पैसा अधिक ले लो तो निस्सन्देह बिना किराये के मकान में हवा खाओ, और हमलोगों का समय व्यर्थ जाय, भूखा रहने पर बाध्य किये जायँ फिर भी हमारी पुकार को कोई सुननेवाला नहीं। किस्सा वही कि "मीठा-मीठा गप्प-गप्प कड़वा-कड़वा थू-थू।"

दूसरे ने कहा—"जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

उस दिन पकौड़ी साह को सेल टैक्स आफिसर के दर्शन न हुए। वह संध्या की ट्रेन से अपने गाँव को लौट रहे थे। ट्रेन के डिब्बे में उनके पास एक मौलवी साहब बैठे हुए दूसरे यात्री से कह रहे थे—

"सरकार ब्लैक मार्केट को दूर करने के लिए पानी की तरह रुपये बहा रही है। यह सब पब्लिक की सेवा के लिए। परन्तु लोग इतने बड़े बेवकूफ हैं कि मानते नहीं, एक दो तीन चार तक दे आते हैं ·····।"

दूसरे यात्री ने कहा, "परन्तु मौलवी साहब, यदि चीजें आसानी से मिल जातीं तो लोग ऐसे पागल नहीं हैं जो अपने पैसे फेंक आते।"

पकौड़ी साह ने भी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, "यही तो मैं भी कहता हूँ।"

मौलवी साहब के उस्ताद ने बहस में किसी से हार मानना

नहीं सिखाया था। अतः उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा, "लाहौल बिला कूवत, मैं कहता हूँ—हमारी सरकार का इसमें कोई कसूर नहीं। ऐसा इन्साफ-पसन्द बादशाह हमें दुनियाँ के किसी कोने में नहीं मिल सकता। मिसाल सुनकर भी खातिर जमा कर लीजिए !".....

और उन्होंने पकौड़ी साह की ओर संकेत करते हुए, दोनों हाथों को फैलाकर कहा—"यह इतना मोटा हैं—६ मन से भी अधिक और मैं इतना (अंगुली दिखलाते हुए) पतला हूँ—एक मन से भी कम, परन्तु दोनों का महसूल बराबर। इससे साबित हो जाता है कि सरकार की नजरों में सभी बराबर हैं। बतलाइये, कितना अच्छा इन्साफ है ?"

पकौड़ी साह इस जवाब से लाजवाब होकर खिड़की से बाहर झाँकने लगे।

सेठजी का दुशाला

उस दिन एक सेठ जी वर्ष के ८० दरवाजे पार कर स्वर्ग-वासी हुए। उनके परिवारवालों के साथ उनके कितने हितैषियों ने भी आँसू बहाये।

इस अवसर पर हमारे गाँव में सुप्रसिद्ध डोम (हरिजन) चेथड़ुवा ने बिना पसीना बहाये ही श्मशान में सेठजी का एक दुशाला पाया। अपने घर लौटते समय उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ते थे।

चेथड़ू ने जैसे ही अपनी झोपड़ी के भीतर पैर रखा, उसके हाथों में एक सुन्दर दुशाला देख, उसकी पत्नी 'करभींगनी' ने अपनी छाती पर मुक्का मारकर कहा, "हाय-बाप! अब नहीं जिऊँगी।"

चेथड़ू आज बड़ा प्रसन्न था कि जब उसकी स्त्री यह जान पायेगी कि उसके पति ने आज एक बहुमूल्य दुशाला पाया है, तब वह उसके चरण धोकर पीयेगी और कहेगी "बीत गये दुख के दिन बालम!" आश्चर्य नहीं यह भी कह दे "अब राजा भये मोरे बालम!" परन्तु यहाँ तो संसार ही बदला हुआ है। वह आकाश से गिर पड़ा। चला था नमाज बख्शवाने रोजा गले पड़ा।

"क्यों क्या हुआ री रनियाँ?"—उसने घबड़ाकर पूछा।

"अब तुम्हारी रनियाँ वन-वन की लकड़ियाँ बटोरेगी।" कहते-कहते उसकी आँखों से आँसू की बूँदें चू पड़ीं।

"यह क्यों?" चेथड़ू की घबड़ाहट बढ़ गयी।

"जब तुम जेल में बैठकर गाँधीजी की तरह चर्खा चलाओगे या चक्की पर पसीना बहाओगे।"

"पुलिस आयी थी क्या?"

"नहीं, परन्तु जब चोरी हुई है तो चोर की खोज-खबर बाकी न रह जायगी।"

"कहाँ चोरी हुई है?" चेथड़ू का विस्मय क्षण-क्षण घटने के बदले बढ़ता ही जाता था।

करिंगनी ने झुँझला कर कहा, "यह तो तुम जानो। चोरी का माल तुम्हारे हाथ में है—मैं क्या जानूँ?"

चेथड़ू को सारी बातें समझ में आ गयीं। फिर जो उसने ठहाका मारा तो उसकी झोपड़ी के पास से सूअर के बच्चे चीखते भागे और विस्मय से अवाक् करिंगनी को उसकी जीर्ण-शीर्ण झोपड़ी हिलती दीख पड़ी। जब हँसी का वेग कम हुआ, उसने करिंगनी से कहा, "इसी बुद्धि पर कहती हो हमें भी 'मुसपलटी' में नौकरी दिला दो!" गाँव के सारे लोग जानते हैं कि सेठ जनकदासजी की मौत हो गयी और तुम्हें मालूम ही

नहीं। उनके बाल-बच्चे जुग-जुग जियें जिन्होंने मुझे यह दुशाला देने की किरपा की है।

करझिंगनी की जान में जान आयी। ओठों पर मुस्कुराहट फूट गयी। आँखों में लज्जा का अभाव न था।

चेथड़ू की प्रसन्नता सहसा गम्भीरता में बदल गयी। उसने कहा, "रनियाँ, क्या तेरी बुद्धि को बैल चर गया जो तू मुझे भी "ब्लैक मार्केट" से तीन के तेरह वसूल करनेवाला बनियाँ समझ बैठी? अरी, कंकड़ खा-खाकर जीवन गुजार दूँगा, परन्तु ऐसा नीच काम हमसे कभी न होगा।

लज्जित करझिंगनी ने बात बदलने की इच्छा से कहा, "सुनो, जाड़े की रातें तुम्हारे साथ आग के पास बैठ-बैठकर हमने काटी हैं—इस चादर को हमें ओढ़ने के लिए दे दो!"

"क्या कहा?" तनिक फिर से कहो तो? चेथड़ू ने आँख बदल कर कहा।

करझिंगनी आजिजी से बोली, "मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ।"

और उसके हृदय में चोट पहुँचाने की इच्छा न रखते हुए भी चेथड़ू ने व्यंग-बाण छोड़ ही दिया।

"घर में नहीं दाना, चल सैयाँ ताड़ीखाना।" न जाने कब तुम्हारी बुद्धि तुम्हारे काम आयेगी।"

और इस निष्ठुर प्रहार से करझिंगनी का चेहरा उतरता देख उसने नरम होकर कहा, "सुनो, चार पैसे के कन्द खा-खाकर हमने चार दिन और चार रातें गुजार दीं, परन्तु आज इस

दुशाले को बेच कर चावल-दाल-नमक लायेंगे, खिचड़ी बनेगी—हम दोनों उसे पेट भर खायेंगे—कितना आनन्द मिलेगा ? और मैल से काली हुई साड़ी जिसमें सत्तर छेद हो गए हैं, तुम्हारे शरीर पर अब जँचती नहीं—मैं तुम्हारे लिए एक किनारीदार साड़ी ला दूँगा। हाँ, उसे पीले रंग में रँगवा कर लाना नहीं भूल सकता। वह तुम्हारे शरीर पर ऐसी खिलेगी कि इन्द्र की सभा की मशहूर परी भी तुमको देखकर शर्म से मुँह छिपा लेगी।"—बात समाप्त होते-होते उसने करझिंगनी के काले गाल पर हौले से प्यार की एक चपत लगा दी।

उसकी आँखों में चंचल यौवन का मादक रस छलक आया। वह अपने राजा चेथड़ू की बुद्धि का लोहा मान कर प्रसन्नता से फूल उठी।

चेथड़ू तुरन्त दुशाला बेचने के लिए बाहर जाने को प्रस्तुत होकर बोला, "अच्छा, तो शुभकाम में देर नहीं अच्छी, मैं इसे बेंच आऊँ।"

करझिंगनी ने सोचा, ऐसा न हो कहीं दो चार रुपये में ही ऐसा सुन्दर दुशाला बिक जाय। इसलिए उसे सावधान करने के अभिप्राय से उसने कहा,—"बीस रुपये से कम मिले तो मत देना।"

झोपड़ी के इस राजा और रानी ने कभी बीस रुपये एक साथ नहीं पाये थे। इनकी दृष्टि में यह बहुत बड़ी रकम होती थी। चेथड़ू ने उपहास की हँसी हँसते हुए कहा, "रुपये ठीकड़े

नहीं होते या पानी में उतराये नहीं मिलते जो एक ओढ़नी का मूल्य कोई एक दम बीस रुपये निकाल कर दे देगा।"

"साँच कहने से कबीर दास का कंबल भी नहीं बिका। इसलिए तुम बीस रुपये से कम मत कहना, यों एक दो कम भी मिले तो ले लेना।

अपनी रानी के इस आग्रह को चेथड़ू ने स्वीकार कर लिया। और जब दुशाला लिए वह बाजार में पहुँचा तो सोच में पड़ गया कि किसके यहाँ जाना हमारे हक में अच्छा होगा? कौन ऐसा दयालु है जो हमारे लिये दयाकर दुशाले का मूल्य बीस रुपये बिना आना-कानी किये निकालकर फेंक देगा।

सभी बजाज उसके दिमाग में आये और गये परन्तु पकौड़ी साह पर उसका विश्वास जम गया। इसका एक जबर्दस्त कारण था। पकौड़ी साह मानें या न मानें पर चेथड़ू के एहसान का बोझ उसके सिर पर था। घटना इस प्रकार है:—

गाँव के एक व्यापारी के बेटे की शादी में पकौड़ी साह बाराती बनकर गए थे और चेथड़ू सींगा बजाने के लिए गया था। कितने लोगों का कथन है 'खटाई बिना कोंहड़े का साग नहीं बन सकता'; और हमारे गाँव वाले कहते हैं—जिस बारात में पकौड़ी साह न जाँय उसका रंग नहीं जम सकता। क्योंकि उनकी भारी भरकम देह देखकर जिस गाँव में बारात जाय उस गाँव वालों को अविश्वास करने का कोई कारण मशाल

लेकर ढूढ़ने पर भी नहीं मिल सकता कि बेटे वाले को भारी-भारी आदमियों से हेलमेल नहीं है।

और जिस गली या मार्ग से पकौड़ी साह अपना मन-मन भर का पैर बढ़ाते हुए निकलते हैं, स्त्रियाँ उन्हें घूर-घूरकर देखती हैं, छोटे-छोटे बच्चे अपने पिता या माँ की गोद में आनंद विभोर होकर उचक-उचककर उनके थुल-थुल शरीर को निहारने लगते हैं। कभी-कभी बारातियों को बड़ा आनन्द मिल जाता है, जब मण्डप में भोजन के समय वधू-पक्ष की स्त्रियाँ यह गीत झूम-झूमकर गाने लगती है—"यही तोंदवाला के तोंदवा पचकाओ रे"

परन्तु, इस बारात में जैसा आनन्द मिलना चाहिये वैसा नहीं मिला। कारण यह था कि वर के पिता वधू के बाप से सोलह सौ रुपये नकद तिलक के रूप में एडवांस ले चुके थे। दो हजार में चार सौ शायद इसलिए कम हो गए कि बेचारे वर चार वर्ष तक परिश्रम करने के पश्चात् भी मैट्रिक की सीमा को लांघ नहीं सके थे। और उस चार सौ की कमी से उनके बाप के हृदय में गांठ बनकर बैठ गयी थी। उन्होंने प्रण कर लिया था कि···बारातियों की संख्या में वृद्धि कर समधी से चार सौ के बदले आठ सौ खर्च कराकर ही दम लूँगा—वह भी समझ लेंगे कि "गज भर नहीं देने से पूरा थान" देना पड़ता है।

बेटी के बापने जब चार-सौ बारातियों का आगमन सुना तो माथा पीट लिया। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि अपने

घर में बेटी का जन्म लेना पूर्व जन्म या इस जन्म के किसी बड़े भारी पाप का कुफल है।

लोक-लाज से या समधी के रूठने के भय से चाहे अपना कर्त्तव्य समझ कर बारातियों का स्वागत करना ही उन्होंने अपना धर्म समझा। अपने गाँव के महाजन सोखू साह से एक हजार पहले ही कर्ज ले आये थे, अब पाँच सौ और ले आये। फिर गेहूँ या ताजा आटा के अभाव में सरकारी स्टौक से निकाला हुआ सड़ा पिसान और बादाम, बनस्पति का तेल बाजार से मँगवाया। पूरियाँ और मिठाइयाँ पुनः बनने लगीं।

भोजन के समय वधू-पक्ष की स्त्रियाँ गा रही थीं, "रोएले बेटी के बाबा आँख से चूए लोखा" और पकौड़ी साह अरुचि के कारण मुँह सिकोड़-सिकोड़ कर पूड़ियों और लड्डुओं को निगलते जाते थे। किसी ने पेट भर नहीं खाया। पकौड़ी साह भी केवल दो दर्जन पूड़ियाँ और पौने तीन दर्जन लड्डुओं पर हाथ साफ कर उठ खड़े हुए।

आधे पेट खाने पर भी यह हालत हो गयी कि जनवासे तक पहुँचते-पहुँचते आधे से अधिक बाराती लोटा लेकर पाखाने की ओर दौड़े। भीतर घुसने के लिए कहा-सुनी होने लगी। जिन्हें झगड़ा पसन्द न था, वे गाँव से बाहर मैदान की ओर लपकते चले।

पकौड़ी साह ने जितना खाया था, वह उनके लिए ऊँट के

मुँह में जीरा के समान था। फिर भी जब पेट में मरोड़ शुरू हुई, लोटा लेकर दौड़ना ही पड़ा।

चेथड़ू ने देखा, पकौड़ी साह गाँव के बाहर एकान्त में एक वृक्ष के नीचे कै-दस्त की अधिकता से अशक्त होकर पड़े हैं, तो दौड़ते हुए आकर बारात में उसने खबर दी। तब पकौड़ी साह बैलगाड़ी पर लादकर लाए गए और चिकित्सा से उनके प्राण की रक्षा हो सकी।

चेथड़ू को अभीतक विश्वास था, पकौड़ी साह उस घटना को भूले न होंगे और अवश्य ही अन्य बजाजों से विशेष हमारे साथ सहानुभूति दिखलावेंगे। परन्तु पकौड़ी साह ने उसे देखकर समझा धोती खरीदने आया है—इसलिए वह रुष्ट होकर बोले, "पचास दूकानदारों के बीच केवल तीस जोड़ी धोती बेंचने के लिये मिली थी और देखते-देखते बिक गयी; किन्तु सारे गाँव के लोग अभी तक दिमाग चाटने आया करते हैं।"

चेथड़ू ने झट उत्तर में कहा, "मुझे धोती नहीं चाहिए।"
"किनारीदार साड़ी चाहिए? अब एक भी नहीं है।"

"साह जी, एक दुशाला....."

पकौड़ी साह गरज उठे, "बनिया दे नहीं और पूरा तौल।"-तू ने अखबार भी देखा है? दिल्ली में कफन का कपड़ा भी नहीं मिला। लखनऊ में कब्र खोदकर चोर मुर्दे का कफन चुरा ले गए और तुझे दुशाला ही चाहिए। बाप-दादे ने भी कभी दुशाला ओढ़ा है? कहीं मुफ्त का माल तो तेरे हाथ नहीं लगा?"

चेथड़ू ने उदास होकर कहा, "दुशाला बेचना है।" पकौड़ी साह चौंक पड़े, "देखूँ तो ?"

चेथड़ू ने अपने मैले गमछे से दुशाला निकाल कर उनके सामने रख दिया। मँहगी से पूर्व दुशाले का मूल्य सौ रुपए से कम न होगा और इस समय दो-तीन सौ रुपये पर भी कहीं मिल जाय तो जीत समझनी चाहिए। पकौड़ी साह के मुँह में पानी भर आया। हौले-हौले बोले, "साल-छः महीने तक काम में लाया हुआ है। चोरी का माल। लो यह पाँच रुपये का नोट और चुपके से खिसक जाओ। हाँ, कोई गला भी काट दे, तो कोई चिन्ता मत करना; परन्तु मेरा नाम भूलकर भी इस दुशाले के मामले में मत लेना।"

चेथड़ू का साहस लौटा। उसने झट मुँह खोला, "साह जी, आप से किसने कहा कि यह चोरी का माल है ?—यह तो सेठ जनकदास जी का है—उनकी मृत्यु के बाद श्मशान में मुझे मिला है।"

पकौड़ी साह घृणा से मुँह सिकोड़ कर बोले, "मुरदे का दुशाला ? राम-राम। खैर कोई बात नहीं, तुम हमारे पुराने हितैषी हो, ये लो दस रुपये और, लेकिन किसी से इसकी चर्चा मत करना।"

"बहुत अच्छा ! परन्तु बीस रुपये दीजिए ! हमारी घरनी ने चलते समय कहा था, इससे कम मिले तो मत देना।"

"अच्छा ! अच्छा !! तुम्हारी घरनी की बात जरूर रहेगी। ये लो आठ रुपये और हैं—कुल अठारह हुए—दो रुपये हमारे पान खाने के लिए अपनी ओर से छोड़ दो भाई, तुम अपने हो—दुश्मन नहीं, इसी से कह दिया। देखो, जुबान की लाज रखना !"

पकौड़ी साह के पेट में चूहे कूदने लगे थे कि कहीं कोई देख न ले और सारा गुड़ गोबर न हो जाय। इसलिये चेथड़ू के अस्वीकार करने पर उसका मुँह माँगा मूल्य देने के लिए तैयार थे। परन्तु, वह बिना आना-कानी किये अठारह रुपये ही लेकर चला गया। उस समय पकौड़ी साह के फूले हुए गालों पर प्रसन्नता फूट पड़ी।

उनका तोंद जल्दी-जल्दी उभरने-पचकने लगा। क्यों नहीं "जो रोगी को भावे वही वैद्य फरमावे।"

दूसरे दिन क्लौथ-इन्सपेक्टर साहब ने पकौड़ी साह की दूकान की जाँच की तो पचीस जोड़ा धोती और चालीस फैन्सी साड़ियाँ ऐसी मिलीं जो स्टौक रजिस्टर में दर्ज न थीं। उनके जान-पहचानवाले इन्सपेक्टर होते तो फिर चिन्ता की कोई बात न थी। उनकी बदली के कारण ही पकौड़ी साह को यह बुरा दिन देखना पड़ा।

क्लौथ-इन्सपेक्टर नये ग्रेजुएट थे। नियुक्ति नयी थी।

यह काम इसलिए पसन्द किया था कि शायद भगवान उनके घर में भी छप्पर फाड़कर रुपये बरसा दें। क्योंकि, उनके एक परिचित क्लौथ-इन्सपेक्टर, जो कभी दिन में खिचड़ी खाकर और रात में चना चबाकर और कभी-कभी उपवास का व्रत करके भी जीवन को घसीटते जा रहे थे, यह काम सँभालते ही एकाएक आठ-दस हजार रुपये के स्वामी बन गए, और अब तो झोपड़ी की जगह दो मंजिला मकान में रहते हैं।

पहला केस था। सगुन अच्छा होना चाहिये। अपनी नयी स्त्री की बात भी क्लौथ-इन्सपेक्टर भूले नहीं थे। एक रात वह इनके गले में बाँह डालकर प्यार से बोली थी, देखो रुपया पैदा करते ही हमें एक 'दुशाला' ला देना। क्या ही अच्छा होता यदि पकौड़ी साह यह दुशाला दे देते।

पकौड़ीसाह, क्लौथ इन्सपेक्टर को दुशाले की ओर ललचायी नजरों से देखते देख, फौरन ताड़ गए कि मछली को जाल में फँसते अब देर न होगी। उन्होंने हौले-हौले कहा, "इन्स-पेक्टर साहब, ऐसा दुशाला चार-सौ देने पर भी नहीं मिल सकता। हाँ, यदि मेरी बात मानकर आप इसे अपने काम में लायें तो बहुत अच्छी बात हो। आपके शरीर पर ऐसा जँचेगा कि आह क्या बताएँ!"

क्लौथ इन्सपेक्टर ने आँखे तरेर कर कहा, "हमें घूस देना चाहता है? यह कभी नहीं हो सकता। हम तुम पर केस करेंगे।"

पकौड़ी साह हँसने की चेष्टा करते हुए बोले, "कौन लुच्चा आपको घूस देता है ? आप हमारे मालिक हैं, राजा हैं, हम आपको सलामी देते हैं।"

कुछ देरतक आना-कानी के बाद क्लौथ-इन्सपेक्टर ने दुशाले को स्वीकार कर लिया और पकौड़ी साह को भविष्य में सावधान रहने की चेतावनी देते हुए आगे कदम बढ़ाया।

पकौड़ी साह ने सन्तोष की साँस ली।

जय जय सियाराम !

पकौड़ी साह के लिये अब किसी को चिराग लेकर भटकना नहीं पड़ेगा, उनके नौकर मिट्ठू को ऐसा विश्वास है। यदि कोई व्यक्ति महँगी का कारण 'युद्ध' समझता है तो उसे पकौड़ी साह की प्रसिद्धि का कारण 'वस्तु का अकाल' समझने में सन्देह न करना चाहिये।

मिट्ठू यदि दिन और रात का हिसाब करता तो सहज में ही ज्ञात हो जाता कि वस्त्र के लिये पकौड़ी साह से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करनेवालों की संख्या एक मिनट में चार कम पचीस से भी अधिक पहुँच जाती है। ऐसे भाग्यशाली, ख्याति प्राप्त व्यक्ति का नौकर होने में मिट्ठू अपने गौरव के गुरूभार से जब दबने लगता है, तब उसकी मूँछों के बाल हिलने लगते हैं।

कितने लोगों का कथन है, संकट के समय यदि कोई मनुष्य किसी मनुष्य की सहायता नहीं करता और उसे आश्वासन भी नहीं देता है तो उसे 'नरपिशाच' कहने में तनिक भी संकोच न करना चाहिये। परन्तु पकौड़ी साह की राय है, जिसने इस 'ब्लैक मार्केट' के समय में दो पैसा इकट्ठा नहीं किया, हाथ में आयी हुई लक्ष्मी को ठुकराया उसने बहती हुई गंगा में डुबकी लगाकर पुण्य नहीं कमाया; उसे 'मूर्ख' कहने में नहीं हिचकना चाहिये।

•••आप खोज करें तो कई ऐसे मेढ़क कवि मिल जायेंगे

जो "मुँह में राम बगल में छुरी" वाली नीति से काम लेते हैं। उनके अशुभ दर्शन के लिए आपको कहीं दूर नहीं जाना होगा। आप घर बैठे-बैठे अपनी बुद्धि की दूर्बीन से उन्हें पहचान सकते हैं। वह धूर्त्त मेढ़क राज कभी छाया में बैठकर धूप में तपते हुए अपने बन्धुओं को उत्साह दिया करते थे, "भाइओ ! तुम अपने हृदय में भय का अन्धकार दूर करने के लिए साहस की आग जला लो। तुम बादल बनकर आकाश पर आक्रमण कर दो और अभिमानी इन्द्रदेव का सिंहासन छीनकर, संसार में सुख की वर्षा से संतप्त प्राणियों के व्यथित प्राण को प्रफुल्लित करो।" परन्तु वही इन्द्रदेव से संसार को अपने सौन्दर्य से चकाचौंध करने वाली धन-सुन्दरी के प्यार को प्राप्त करने की आशा पाकर, एक इशारे पर अपने बंधुओं को दुख की आग में जलते हुए छोड़कर कुँआ में जा बैठे। उनके इस छलमय व्यापार पर जब कभी उनके बन्धु हृदय में आग, आँखों में विस्मय और आँसू लेकर उन्हें उलाहना देते हैं, तब वह विलासिता के पानी में गोता लगाने से क्षण भर रुककर, कुँआ के बाहर झाँकते हुए कहते है, "तुम कुँआ से बाहर कब निकलोगे कवि।"

कवि ही क्यों कई लेखक, पत्र-सम्पादक, पुस्तक-प्रकाशक, लीडर, लीडर, डाक्टर, मास्टर, चौकीदार, थानेदार, पंडित, पुजारी आदि ऐसे मिलेंगे जो "हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और" वाली कहावत चरितार्थ करते हैं; अर्थात् जो कहते हैं वह करते नहीं। परन्तु पकौड़ी साह में यह दुर्गुण नहीं।

वह भीतर और बाहर एक रूपवाला सिद्धान्त मानने में अपनी बराबरी नहीं रखते। जो वह कहते हैं, करते भी हैं। यदि कोई इस सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं तो उसे पकौड़ी साह के योग्य नौकर "मिठूआ" से मिलना चाहिये। वह मूँछों पर ताव फेरते हुए, पानी पी—पीकर उससे साढ़े सात घण्टे शास्त्रार्थ करने के लिए एकदम तैयार है। इससे भी अधिक समय की आवश्यकता पड़े तो पकौड़ी साह का आदेश पाकर वह रात दिन का लम्बा समय, "मि० जिन्ना की तरह पाकिस्तान की चिन्ता में" व्यतीत करने के बदले पकौड़ी साह के सम्मान की चेष्टा में बहस कर गुजारने की बहादुरी कर सकता है।

पकौड़ी साह को हाल में ही तीन गाँठ स्टैंडर्ड क्लाथ की साड़ियाँ मिलीं। उसके साथ ही यह आदेश भी मिला "दो गाँठ सबके सामने खोलकर बेंच देना" और एक गाँठ सुरक्षित रखना, इन्सपेक्टर के सामने उसकी बिक्री होगी।

"पुनः काँग्रेस मंत्रि-मण्डल होनेवाली है?" की चर्चा की तरह शीघ्र यह खबर आस-पास के गाँवों में फैल गई। वस्त्र लेने के लिए स्त्री पुरूषों का दल पकौड़ी साह के द्वार पर जमने लगा। भीड़ देखकर पकौड़ी साह 'लक्कड़ बाबा, की दुहाई देने लगे कि कहीं कोई ऐसा उपाय मिल जाय जिससे दस-बीस जोड़े बेच कर ही शेष साड़ियों को ब्लैक-मार्केट द्वारा बेंच कर लाभ उठाने के लिये छिपा सकूँ। क्योंकि, आज तक कभी ऐसा कुअवसर उनके जीवन में नहीं आया जब उन्होंने उचित

लाभ को अनुचित-लाभ बनाए बिना वस्त्र बेचे हों। आज यह पुरानी लकीर उनके जीवित रहते 'कम्यूनिष्टों की मूँछों की तरह' मिट जाय—यह क्या उचित होगा? कभी नहीं। यह परिवर्त्तन देखने के पहले उनकी आँखें फूट जायँ? इसे वह अधिक पसन्द करेंगे।

इसके पूर्व जब एक गाँठ स्टैंडर्ड की साड़ियाँ मिली थीं, वह अलग बैठकर ग्राहकों को पुर्जी देते थे। तब ग्राहक साड़ी के लिए उनके मुनीम जी के पास जाते थे और वह आठ-आठ दस-दस पुरजियाँ एक साथ लेकर हाथों की सफाई दिखला, कुछ लोगों से रुपये लेकर साड़ियाँ दे देते थे। फिर दूसरे लोगों से पुरजियाँ लेते देख, जिन्हे पुरजी देने पर भी साड़ी न मिलती थी, वह घबड़ाकर कहते थे, "मुनीम जी! मैंने भी पुरजी दी है। ये रुपये लीजिए और पहले हमें साड़ी देकर नयी पुरजी लीजिये।" तब वह दाँत किटकिटाकर कहते थे, 'झूठा कहीं का! "आँखों में दिन दहाड़े धूल" झोंकना चाहता है? जाओ, दूसरी पुरजी ले आओ, बिना पुरजी के साड़ी न मिलेगी।"

और पकौड़ी साह पांच-पंचों को सामने बैठाकर, दूकान से दूर. पुरजी काट रहे थे। "अधिक भक्ति चोर का लक्षण" वाली कहावत से अनभिज्ञ पंचों ने अपनी आँखों से देखा था—गाँठ की पूरी साड़ियों की पुरजियाँ कट गयीं, तब वह ग्राहकों से बोले थे, "अब आपलोग अपने-अपने घर जाइये। हमलोग भी जाते हैं।" पकौड़ी साह ने भी अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उपस्थित

जन समुदाय से कहा था, "हाँ श्री रामायण जी में तुलसी बाबा ने जो है सो, कहा है, "तजहु आस निज-निज गृह जाहू।"

"हाँ पंचों! जाते समय बोलते जाइये "जय जय सियाराम!"

परन्तु किसी के सूखे मुँह से बोली न निकल सकी थी। पकौड़ी साह 'चोर का मुँह चाँद जैसा' वाली कहावत चरितार्थ करते हुए गरज उठे, 'छि: छि:।' भगवान के पवित्र नाम को उच्चारण करने के लिए किसी के मुँह में जुबान ही नहीं। यदि मैं रण्डी या लौंडा होता और ठुमुक-ठुमुक कर नाचते हुए घूँघट की ओट से आँखें मटकाकर, कहता, 'नाचो-पंचो!' तो मुझे विश्वास है राम कृपा से आधे से अधिक लोग थिरक-थिरककर गुनगुना उठते 'ताता-थइआ—ता-तक-थइआ' परन्तु-राम-कृपा से मैं आप लोगों को भी क्यों अपराधी बनाऊँ?—सब समय का दोष है। यह भ्रष्ट युग है न! हाँ, चलते-चलते आओ, गाओ पंचो, अपनी सारी शक्ति लगाकर यदि भगवान के सच्चे पुजारी हो और वह एक हाथ कमर पर, एक सिर पर रखकर नाच-नाच कर गाने लगे थे, "जय सियाराम, जय-जय सियाराम।"

इस बार यह प्रमाणित हो गया था कि लोगों के मानस में रहने वाले भगवान के विश्वास-देवता को टी० बी० हो गया है। उपस्थित जनता की होठों पर जय सियाराम की आवाज फुस-फुसा कर रह गयी थी।

इस प्रकार अपनी युक्ति से वह आधी गाँठ से अधिक

साड़ियाँ बचाकर 'ब्लैक-मार्केट' के देवता की कृपा से मूल्य के दूने दाम में बेंचकर टेंट गरम कर चुके थे और एक बाल भी बाँका न हुआ था। हाँ, यह युक्ति कानो-कानो में पहुँचते-पहुँचते "एक हाथ की कँकड़ी और नव हाथ का बीआ" बनकर अधिकारी लोगों के कानो तक पहुँच गयी थी। अधिकारी लोगों को विश्वास हुआ या नहीं इसे कौन बता सकता है। परन्तु यह अनुमान कोई कर सकता है कि पकौड़ी साह जैसे दानी के नाम पर बेईमानी का कलंक लगाने के लिए कोई तैयार नहीं हो सकता।...."दानी और पकौड़ी साह ?" ऐसे प्रश्न करने वाले को भी अब पकौड़ी साह को दानी कहने में संकोच नहीं करना चाहिये। यह सत्य है, उनके सामने यदि कोई भिखारी आ जाय तो वह भी अभी अपने बाप-दादे के समय से चली आती हुई प्रथा के अनुसार उसे एक भी पैसा न देकर एक मिनट में चार दर्जन गालियाँ सुना देंगे। परन्तु हाल में ही हजारों रुपये चन्दा देकर दानवीर की सूची में उन्होंने अपना नाम लिखवाया है। इसलिये उन्हें 'दानी' कहने के समय किसी को सिर नहीं खुजलाना चाहिये। और, साल में चन्दा वसूल कर वह 'जय जय सियाराम' का अखण्ड-हरिकिर्त्तन भी एक बार करा ही देते है—यह क्या कम महत्त्व की बात है ! कितने सभ्य व्यक्तियों को भी संदेह है कि वह चन्दे के रुपयों में से डेढ़ दो सौ साल में बचा लेते हैं। कोई हर्ज नहीं। उसे राम-नाम की कृपा समझनी चाहिए।

लक्कड़ बाबा की कृपा समझिए या पकौड़ी साह की सूझ की प्रशंसा कीजिए, उन्हें एक युक्ति हाथ लग गयी। वह तरुणी को प्राप्त करनेवाले बूढ़े की तरह प्रसन्न हो मन-ही-मन कहने लगे, "बेशक इस अमोघ अस्त्र से साँप भी मर सकता है और लाठी भी नहीं टूट सकती।"

वह अपने भारी थुल-थुल शरीर की गठरी के भार को सँभाले हुए नीचे पहुँचे। वहाँ फाटक के छड़ को पकड़ कितने स्त्री-पुरुषों का समूह धूप की गरमी को सहते हुए खड़ा था। छड़ पकड़ कर एक लोअर प्राइमरी स्कूल के हिन्दी अध्यापक भी खड़े थे। पकौड़ी साह से उनकी पुरानी जान-पहचान थी। वह पकौड़ी साह को देखते ही बोले "साह जी, मैं दो घंटे से इस हालत में खड़ा हूँ।"

अनेक स्त्री-पुरुषों ने दाँत दिखलाते हुए कहा, "हम अभी तक भूखे खड़े है। साह जी, दया कीजिये!"

पकौड़ी साह ने लापरवाही से कहा, "राम कृपा से इससे हमें क्या मतलब? मैंने तो आपलोगों को कष्ट सहने के लिए निमंत्रण नहीं दिया था।...और मर्द लोग अलग हट जाँय, केवल स्त्रियों को ही साड़ियाँ मिलेगी।"

सुनकर सभी पुरुष सन्नाटे में आ गये। अध्यापक ने साहस बटोर कर कहा—"साह जी, मैं बीस दिनों से दौड़ता हूँ। आपने बचन दिया है और आप जानते हैं, हम शिक्षकों को कितना कम वेतन मिलता है वह भी तीन-तीन चार-चार महीनों

के बाद। कभी-कभी ६ मास भी बीत जाते हैं। न विश्वास हो तो प्रेसिडेन्ट साहब से पूछ लीजिये !"

पकौड़ी साह ने चिढ़ कर कहा, "हमसे किसी से क्या मतलब ! राम-कृपा से हम किसी का गेहूँ नहीं खाते हैं और न किसी की जमीन में बसते हैं।"

अध्यापक गिड़गिड़ा उठे, "हम बहुत गरीब हैं। 'ब्लैक मार्केट' से खरीदने से असमर्थ हैं। आप दो नहीं तो एक ही साड़ी दे दीजिये ! लीजिये, दो रुपए सवा आठ आने।"

"एक सूत भी नहीं मिल सकता। हमारे लिए छोटी-बड़ी अँगुलियाँ सभी बराबर हैं। साड़ियाँ केवल स्त्रियों को मिलेंगी।"

"साड़ी पुरुष नहीं पहनेगा, जब पहनेगी तो स्त्री। अतः पुरुष को भी साड़ी देने से आप अस्वीकार न करें।"

"इन साड़ियों में अन्य चार व्यक्तियों की साझीदारी है। उनकी राय से जो बातें तय हो चुकीं वह बदल नहीं सकती।"

"अच्छा, तो हमें दोष न देंगे ! आपने साड़ी रहते हुए देने से अस्वीकार किया है। मैं श्रीमान् एस० डी० ओ० साहब से निवेदन करूँगा।"

"आप की मर्जी। परन्तु हमारी बात की गाँठ बाँध लीजिये। इससे "न खर टूटेगा न भूसा। एस० डी० ओ० साहब जानते हैं कि तीन गाँठ साड़ियाँ बिकने के लिए गई हैं और दस हजार से अधिक आदमी इसके खरीदार आयेंगे। फिर जिनको न मिलेगी वह तो क्रोधित होकर पकौड़ी के विरुद्ध प्रार्थना पत्र देगा ही।...."

"परन्तु मैं आप को गाय की पूँछ पकड़वा कर सच और झूठ का निर्णय कराऊँगा।"

"अच्छा। जाइए, हमें फाँसी और कालापानी दिलवा दीजियेगा। मुनीम जी! देखो, कैसा जमाना आ गया कि आज तीन कौड़ी का आदमी भी हमें आँख दिखला जाता है।"

दो घन्टे के बाद।

पकौड़ी साह के द्वार के सामने पुरुषों के बदले स्त्रियों का दल खड़ा था। मिठुआ फाटक पर डटा हुआ था। केवल एक स्त्री को एक बार भीतर आने की आज्ञा देता था। मुनीम जी फाटक के भीतर साड़ी का दाम लेकर एक पुर्जी लिख देते थे। एक बार एक युवती पकौड़ी साह की कोठरी में घुसी। बाहर खड़ी बुढ़ियों में कानाफुसी हो रही थी। एक बुढ़िया ने एटम बम की तरह कहा, "केवल जवान औरतों को बुला-बुलाकर साड़ी दी जाती है। हम बुढ़ियों की ओर तो कोई फूटी आँख से भी नहीं देखते।"

मुनीम जी सात-बार राम का नाम उच्चारण कर बोले, "बुढ़िया! तुझे भगवान का कुछ भी भय नहीं जो ऐसे भगत और गाय के समान सीधे मनुष्य पर कलंक का टीका लगाती हो? सुनो, शिवजी से दुस्साहस करनेवाले 'कामदेव' की तरह एक ही श्राप में तुम जलकर राख हो जाओगी।"

इसी समय मिठ्ठू ने साफ सुना—कोठरी में किसी के गाल पर पूरी शक्ति से तमाचा मारने से उत्पन्न शब्द 'चटाख।'

पकौड़ी साह घिघिया रहे थे और साड़ी लेने के लिए उनके

पास गयी युवती क्रोधावेग में चिल्ला रही थी "मुँझौंसा ! तुम्हारे शरीर में कोढ़ फूटे। तुमको काली मैया उठा ले जायँ।"

मुनीमजी घबड़ाकर कोठरी के भीतर जाना चाहते थे, यह देखने के लिए कि 'अप्रिय' नाटक का यह कौन-सा दृश्य हो रहा है। परन्तु यह कष्ट उठाने के लिए उनको अवसर न मिल सका ; क्योंकि पकौड़ीसाह बेतरह घबड़ाये हुए गाल सहलाते कोठरी के बाहर निकल रहे थे और युवती उनके थुल-थुल शरीर को रूई का बण्डल समझ अपनी मुष्टिका से धुन रही थी।

पकौड़ीसाह लपककर मुनीम के पीछे शरण पाये। मुनीम जी ने उन्हें मुष्टिका प्रहार से बचाने के प्रयत्न में अपने दुबले-पतले शरीर पर केवल सात घूसे खाये। इस घटना से बहुत खलबली उत्पन्न हो गयी। युवती जब पकौड़ी साह के मरे हुए बाप-दादे के नाम पर जुबानी सात झाड़ू मारती हुई साड़ी लेकर बाहर निकली तब कई स्त्री-पुरुषों ने उससे पूछा, "क्यों क्या हुआ री ?"

उसने खीझकर कहा, "पकौड़िया का श्राद्ध हुआ।"

पकौड़ी साह का साहस अब लौटा। 'वह भाड़ की तरह गरम होकर मिट्ठू से बोले "फाटक बन्द करो ! अब साड़ियाँ न बिकेंगी। यह दाँत किटकिट हमें पसन्द नहीं।"

मिठुआ ने तुरन्त आदेश पालन किया।

कई युवती और बूढ़ी स्त्रियों ने गिड़गिड़ाकर कहा, "आप हमारे भाई-बाप हैं, हम पर दया करे ! अब हमारे कपड़े हमारी लाज़ नहीं छुपा सकते।"

मुनीम जी भट्टी की तरह लाल होकर बोले, "तुम्हारी आँखें क्या फूट गई है ? देखती नहीं हो हमारे साह जी के गाल पुआ की तरह सूज रहे हैं। वाह रे जमाना ! "अपना सिर है, दूसरे का बेल बराबर" अहा: हा: हा: हे भगवान, पाँचो अगुलियाँ गाजर की तरह उभर आयी हैं। मिठुआ !....."

"जी सरकार !"

"अरे सरकार का बच्चा। ठूँठ पेड़ की तरह अलग खड़ा है। मालिक के दुख में भी काम नहीं आता।"

"मिठू घबड़ा गया !"

पकौड़ी साह ने दबी आवाज में कहा, "पानी चला गया।"

मिठूआ ने चौंक कर कहा ; "पानी ? तुरन्त लाता हूँ। हाँ बालटी में लाऊँगा या ग्लास में ?"

पकौड़ी साह दहाड़ उठे, "अपने सिर में।"

"सिर में ?" मिठू विस्मय से भर गया।...और समझा। सिर दबाने के लिए कहते हैं मालिक। "सिर में दर्द है तो बैठ जाइए, मैं तेल लगा दूँ। हाँ, मालकिन से कौन सा तेल मांग लाऊँ ? गुलरोगन या चमेली ?..."

"उल्लू ! पाजी ! गदहा !" कह पकौड़ी साह दाँत पीसने लगे।

मिठू समझ न सका कि उसके योग्य मालिक क्यों आज उस पर 'मन का बुखार उतार' रहे हैं।

संध्या समय कपड़ा-कमिटी के मंत्री पकौड़ी साह से बोले,

"आपके सम्बन्ध में तरह-तरह की अफवाहें फैल रहीं हैं। बची हुई साड़ियाँ कल सबके सामने बेच दीजिये।"

"अब तो केवल एक गाँठ की साड़ियाँ बाकी हैं, जो इन्सपेक्टर साहब के सामने बेंची जायेंगी। और, कोई आपसे कहे कि कौआ आप का कान लिए जाता है, तो कौआ को न देखकर पहले आपको अपना कान देखना चाहिये। आप हमारे कैस मेमो को उलट-पलटकर देख सकते हैं।"

पकौड़ी साह के उत्तर से विस्मित होकर मंत्री ने कहा, "लोगों का अनुमान है, केवल बीस या पचीस साड़ियाँ बिकी हैं, बाकी आपके पास रखी हैं। आप अपनी दूकान दिखला सकते हैं।"

इस बार पकौड़ी साह के चेहरे का रंग गिरगिट की तरह कई बार उतरा-चढ़ा। बोले, "दूकान ?.....रामकृपा से आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं कर मेरा अपमान कर रहे हैं। अतः मैं आपसे साफ-साफ कह देता हूँ—दूकान देखने का अधिकार आप को नहीं। "क्या नकद सौदा खूब है—इस हाथ दे, उस हाथ ले।"

इस उत्तर से निरुत्तर होकर मंत्री जब मकान के बाहर निकले—पकौड़ी साह ने अपने मुनीम से फुसफुसा कर कहा, "आज रात में साड़ियों को यहाँ से हटाकर छिपा देने में हमें भूल नहीं करनी चाहिये।"

और फिर तालियाँ बजा-बजाकर वह दहाड़ने लगे।

जय सियाराम, जय जय सियाराम।

पाँचों अंगुलियाँ घी में

दूसरे दिन मुनीम जब दूकान पर आया, पकौड़ी साह आश्चर्य में भर गये। हर्ष के भार से दबे हुए मुनीम से बोले, "कहिये मुनीम जी, क्या खबर?"—और किञ्चित मुस्करा दिये। मुनीम ने हँसते हुए कहा—

"मारिये उछल कर जमीन पर लात। पाँचो अंगुलियाँ घी में हैं।"

पकौड़ी साह प्रसन्नता से गद्‌गद् होकर बोले, "क्या कन्ट्रोल टूट गया ?"

"जी नहीं, बिल्ली के भाग्य से सिकहर टूट गया।"

"रामकृपा से मैंने समझा नहीं।"

"समझने में दो चार घंटे नहीं लगेंगे। कल सन्ध्या को कपड़ा-कमिटी के मन्त्री आपको लाल-पीली आँखें दिखला गये कि स्टैण्डर्ड की साड़ियाँ सब के सामने खोल कर बेच दीजिये; दूकान दिखलाइये; यह कीजिये; वह कीजिये; अब मालूम होगा "चना का होरहा कैसे बनता है।"

पकौड़ी साह के कपोल विजय के हर्ष से पावरोटी बन गये। वह प्रसन्नता, विस्मय और उत्सुकता से भर, अपने मुनीम की बात काट कर बोले, 'क्या उसके कमर में रस्सा लग गया ? चलो रास्ते का काँटा दूर हो गया। राम·····राम उसकी

नीयत ऐसी खराब हो गयी थी कि दो पैसे चोरी चंड़ाली कर हम कमाते थे तो उसकी आँख में खटकता था। यह नहीं जानता था कि यह सतयुग नहीं भ्रष्टयुग है। लाख में एक ही आदमी, वह भी खोजने पर, शायद मिल जाय, जो ईमानदारी से पैसे कमा कर खाता है।

"मुनीम जी ने दबी हुई आवाज में कहा···कभी···।

बात पूरी न हुई और पकौड़ी साह सोडा वाटर के जोश को भी फीका करते हुए बोले, गवाही नहीं मिल सकती कोई हर्ज नहीं। गवाही देने के लिये बन्दा (अपनी छाती को थपथपाकर) तैयार है। वह काँग्रेसी है—कौन नहीं जानता।"

"आप···"

"क्या कहते हो मुनीम जी, हमें प्रमाण नहीं मिल सकता ? अजी, पैसे में वह ताकत है कि चाहूँ तो आकाश से तारे तोड़ लाऊँ। और वह खादी पहनता है। दूसरा अधिक सबूत और क्या चाहते हो ?"

"लेकिन···"

"हाँ, यह सत्य है, अन्न-वस्त्र के अभाव में आजकल लोग गाढ़ा से भी अपनी इज्जत बचा रहे हैं···तब मैं कहूँगा हाँ—मैं कहूँगा, वह मुझे धमकाते थे कि सरकार भारतवासियों को स्वराज्य नहीं देना चाहती, ऐसे दुश्मन को चन्दा दोगे तो तोंद पचका दूँगा। बताओ, इस बात पर भी वह बचा रह जायगा ? अजी, मेरी बात को गाँठ बाँध लो मुझसे शत्रुता

करके वह चैन की साँस ले—यह कभी नहीं हो सकता। "जल में रहकर मगर से वैर, ऊँ···?"

मुनीम ने इस बार अपने शब्दों पर आवश्यकता से अधिक जोर देते हुए कहा,—'साबजी'! 'मैंने कहा बनारस और आप समझ गये दिल्ली।"

पकौड़ी साह आकाश से गिर पड़े।

"तुम क्या कह रहे हो?"

"मैंने कहा—"गेहूँ के साथ घुन भी पिसेगा।"

"इससे क्या लाभ होगा?"

"जर्मनी ने ब्रिटेन पर आक्रमण करने के साथ रूस पर भी चढ़ाई कर दी इससे ब्रिटेन को क्या लाभ हुआ?"

"ओह! राम कृपा से अब समझा। मेरा ध्यान तनिक दूसरी ओर चला गया था। तुम लड़ाई की बात कह रहे हो! उस दिन कुकुर-साह का नाती अखबार पढ़ रहा था—राम कृपा से हिटलर देखते-देखते मर गया और मुसोलिनी को देशभक्तों ने फाँसी·····।"

"आप अब भी नहीं समझे क्या?···'कपड़ा-कमिटी' के मन्त्री जब यहाँ से प्रेसिडेन्ट साहब के यहाँ गये—उनके पास दो सौ आदमी एक हाथ की लम्बी दरखास्त लिखकर ले गये कि हमें कपड़ा चाहिये। उनलोगों ने कहा—बिना एस० डी० ओ० साहब की आज्ञा के हमलोग एक सूत नहीं दे सकते। बस सबको ताव आ गया और उसी समय तीन हाथ की लम्बी दरखास्त

लिखायी गयी। सबने उसपर अँगूठे का निशान चिपकाया और एस० डी० ओ० साहब के पास उसको भेज दिया।"

पकौड़ी साह की आँखें चमकने लगीं।

"वाह मुनीमजी, दहीबड़े से भी अधिक चटपटी खबर है। दरखास्त में क्या लिखा गया ?"

मुनीमजी ने मुस्कराते हुए कहा—"यही कि प्रेसिडेन्ट साहब और मन्त्री मिलकर, पकौड़ी साह आदि दूकानदारों से कपड़े के छपे मूल्य से दूने-तिगुने दाम पर कपड़ा बिकवाते हैं।

"लो, आँख के अन्धे और गाँठ के पूरे।" कहकर पकौड़ी साह ने दाँत किटकिटाया।

"कहाँ हैं मन्त्री ? आवें, उन्हें मैं समझाऊँ कि जैसा पशु होता है वैसी ही घास दी जाती है। अब भलाई का समय नहीं है। "जिसके लिये चोरी करो वही कहे चोर"। इसीलिये मेरे मरते समय चेता गये थे, "देख बेटा, रोटी पकाना शकर से और दुनिया चलाना मक्कर से।"

इसी समय लपकते आते हुए गोंइठामल के मुख पर पकौड़ी साह की उत्सुक आँखें जम गयीं। गोंइठामल जी स्टैण्डर्ड की साड़ियों में पकौड़ीसाह के साझीदार थे। चोर-बाजार के प्रधान व्यापारियों को यदि कोई 'चोर' कहने में संकोच नहीं करता तो उसे पकौड़ीसाह और श्रीयुत गोंइठामल जी को 'चोर-चोर मौसेरे भाई' कहने में बगल नहीं झाँकना चाहिए।

गोंइठामलजी ने आते ही कहा—जल्दी कीजिए··· ।"

अपराधी सदा सशंकित रहता है। पकौड़ी साह और मुनीम ने समझा क्लौथ इन्सपेक्टर शायद उनकी दूकान की जाँच करना चाहते हैं ; क्योंकि कल उन्होंने 'कपड़ा-कमिटी' के मन्त्री को दिखलाने से साफ इनकार कर दिया था।

'अयँ' कह पकौड़ीसाह भय के कारण घबड़ाकर दर्द की तरह उठे और आँसू की तरह टप से बैठ गये।

मुनीम ने चिल्ला कर नौकर को पुकारा, "मिठ्ठू ! ओ मिठुआ ! रे मिठुआ का बच्चा", परन्तु आवाज ऊँची होने पर भी मुनीम की पुकार मिठुआ के कानों तक न पहुँच सकी।

पकौड़ीसाह झल्ला उठे—उल्लू का पट्ठा, मुफ्त में रोटियाँ तोड़ता है। रात ही मैंने उससे कह दिया—मुनीम जी के घर बची हुई सौड़ियाँ रख आ ! परन्तु घोंघा-बसन्त पत्थर बन गया। भैंस के आगे बीन बजाए·····।

मुनीम ने आवाज कसी—"कहीं गाँजा पीकर सो गया होगा।" इसी समय मिठुआ क्रोधपूर्ण दृष्टि से मुनीम की ओर देखते हुए कोठे से नीचे उतरा और दहाड़ते हुए बोला—"साहजी हमारा हिसाब कर दीजिए। हम इस घर में अब पानी नहीं पी सकते। कोई लखपती होगा अपने घर का। हम किसी की आँख नहीं सह सकते।"

गोंइठामलजी ने उसे रोका—"क्यों ? क्या हुआ बबुआ मिठ्ठू ?"

"मालिक !" मिठू ने कहा, "काम का यह हाल है कि उठो

तो जमीन खोदो और बैठो तो ढेला फोड़ो। उस पर मुनीम जी हमें फूटी आँखों से नहीं देखना चाहते। मन है, संगत में बैठकर कभी एक-आध दम लगा लेता हूँ तो नाक में दम किये रहते हैं। अभी देखिये, मालिक से चुगली कर रहे थे। आप तो दारू पी-पी कर अपनी जोरू को भेड़ बकरी की तरह पीटते हैं। सूप को हँसे चलनी, जिसमें सत्तहत्तर छेद, ऊँह!

मुनीम जी पटाके की तरह फूट पड़े—"खबरदार मिठुआ! जीभ खींच लूँगा। छोटा मुँह बड़ी बात?"

'जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दुगुन कपि रूप दिखावा' की नीति से काम लेते हुए और ईंट का उत्तर पत्थर से देते हुए मिठुआ ने कहा—"अधिक जुबान हिलाओगे तो बटई की तरह टाँग पकड़ कर चीर दूँगा।" मुनीम के क्रोध की आग में किरासन तेल पड़ गया। वह कुरते की बाँह चढ़ाते हुए पकौड़ी साह से बोले—बस बाबूजी, अब मुझे मत रोकिये। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ—आज मिठुआ को जीते जी नहीं छोड़ूँगा।"

मिठुआ गरजा—"एँह, जैसे मैं मूली-गाजर हूँ। तुम हमारा बाल भी बाँका नहीं कर सकते। हमको कोई न मारे तो हम सारे जग को मार डालें।

"क्रोध मत बढ़ा; कहता हूँ मिठु, नहीं तो साग-बथुआ की तरह गला काट दूँगा।

"आज तक किसी बकरी की टाँग भी काटी है? वह

बन्दरघुड़की किसी और को दिखलाना ! जो बादल गरजता है, वह बरसता भी है ?"

"घबड़ाओ नहीं, अभी मालूम हो जाता है कि तुम्हारे दाँत तोड़ने के लिये हमारा एक ही मुक्का काफी है।"

"मुरगे की तरह सीना मत तानो ! एक घूँसे में छठी का दूध याद करा दूँगा।" बस, मुनीम जी मिट्ठू के घरवारवालों से कई रिश्ते जोड़ते हुए उस पर बाज की तरह टूट पड़े। पकौड़ीसाह ने मुनीम की कमर पकड़ी और गोंइठ मल ने मिट्ठू के दोनों हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा। सात मिनट तक "तू-तू मैं-मैं" के बाद दोनों हाथ-पैर पटकने से बाज आये। परन्तु जुबान बैल गाड़ी के चक्के की तरह डोलती रही। दोनों के दिल के गुबार दिल में ही रह गये थे।

मुनीम ने कहा—"दारू तो बड़े-बड़े लीडर-लीडर, राजा-महाराजा, पंडा-पुजारी पीते हैं। मैं तो दावे के साथ कह सकता हूँ, दारू पिये बिना कोई बड़ा आदमी नहीं बन सकता। शायर और कवियों की जान दारू से ही बची है। सुनो, वह दारू पीने के लिये अनुरोध करते हैं, "ले शेख आँख मींच के पी जा शराब है, जो कुछ बची-खुची मेरी जूठी शराब है, और पिये जा·····पिए जा···"

मिट्ठू तो मूँछों पर ताव देते हुए बोला—'जिसने न पी गाँजे की कली, उस लड़के से लड़की भली' और शास्त्र में लिखा है 'गाँजा-गुलाब रंग भांग रंग भूतिया, दारू खराब रंग खात फिरे जूतियाँ'।

पकौड़ी साह ने क्षुब्ध होकर, कहा, "तंग आ गये इन दोनों से। भय से हमारी जुबान तालू में सट रही है और इनलोगों को लड़ाई सूझ रही है। सच कहा है किसी ने, किसी का घर जले और कोई तापे।"

गोंइठामल ने सिर हिलाते हुए कहा "नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानियों में मेल कभी नहीं हो सकता। मेंढ़कों से एक जगह एकत्रित होने की आशा करना भारी भूल है। बहुत ठीक कह रहा था उस दिन मंगरू भगत कि सियारों में एकता रहती तो कुत्ते उनका क्या बिगाड़ सकते?"

पकौड़ी साह चिन्ता के भारी बोझ से दबकर कराहते हुए बोले, "अब क्या होगा? कुछ साड़ियों की बिक्री हमने कर दी है और कुछ साड़ियाँ अभी ज्यों-की-त्यों मौजूद हैं। बताओ मुनीम जी! कहो तो मिठू, तुमने हमारे गले में फाँसी का फंदा लगाया या नहीं? यदि मेरी बात मानकर रात ही को साड़ियाँ यहाँ से हटा दिये होते तो आज का दिन देखने को नहीं न मिलता?"

गोंइठामल लापरवाही से बोले, "अभी तो कुछ बिगड़ा नहीं है, आज रात में हटा दीजियेगा।"

"परन्तु इन्सपेक्टर साहब तो तुरंत घर-तलाशी करेंगे! हाय रे मिठू, तू ने मार डाला!"

मुनीम के साथ गोंइठामल चौंक पड़े। मिठुआ टकाटक ताकता रहा।

"यह आपसे किसने कहा?"

"आप तो आते ही बोले, जल्दी कीजिए..."

"ओहो अब समझ में आया।" कहकर गोंइठामल जी मुस्कुराये। "पकौड़ी साह जी! आप समझने में बहुत जल्दी करते हैं। इस तरह भयभीत होने से नाव कैसे पार जायगी? हाथ भर का कलेजा धन कमाने के लिये होना चाहिए।"

"तो आप क्या कर रहे थे?' पकौड़ी साह ने प्रश्न किया। गोंइठामल जी ने मिठ्ठू की ओर देखा। उसे अलग हटा देने का अभिप्राय समझकर पकौड़ी साह ने उससे कहा—बबुआ मिट्ठू, जा मलिकाइन के पास। जो वह कहें तू करना।

मिट्ठू को मुँहमाँगी मुराद मिल गयी। उसके जाने के बाद गोंइठामल ने कहा—"शेष एक गाँठ स्टैण्डर्ड की साड़ियाँ जिसे क्लौथ इन्सपेक्टर के सामने बिक्री करने की आज्ञा मिली थी—उसे तुरन्त घर के भीतर खोलवा दीजिये!"

"इन्सपेक्टर की आज्ञा मिली है?"

"हाँ, उन्हें हमपर विश्वास है। मैंने एक देहाती दूकानदार के हाथ दूने दाम में सौदा पक्का कर लिया है। वह आज रात को बैलगाड़ी लेकर आयगा। हाँ, मुनीमजी, आज रात को कुल साड़ियों की बिक्री कैश-मेमों में लिख देना।"

दूसरे दिन कपड़ा-कमिटी के मंत्री के कानों तक यह खबर पहुँची। साँच छिपाये ना छिपे जैसे लहसून बोय। उस दिन वह १० बजे पकौड़ी साह के कैश-मेमों की जाँच कर रहे थे। एक देहाती जमींदार के नाम पर कैश मेमों देखकर वह चौंके बाप रे, किसी को एक भी न मिले और किसी को ६-६ जोड़ी! अंधेर नगरी है।"

पकौड़ी साह ने गंभीर होकर कहा—"छोटी-बड़ी सभी अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं। आप को अपने दिल से पूछना चाहिये। क्यों मुनीम जी बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलया कोय, जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।"

मुनीम बोले, "कुछ नहीं, कुछ नहीं। हैं हैं....."

पकौड़ी साह ने कहा, "आप समझते नहीं मन्त्री जी ? राम कृपा से आप संसार की भलाई के लिये कमर बाँध कर खड़े हुए हैं फिर मेरी भलाई से मुँह क्यों मोड़ते हैं ? क्यों मुनीम जी ? कोई भलाई करने का ठीका ले ले तो उस साधु के जैसा, जिसने नदी में बहते हुए बिच्छू के डंक को सहते हुए भी उसे मृत्यु के मुख से बचा लिया।"

भगवान जानें या पकौड़ी साह के इष्टदेवता 'लकड़बाबा' जानें कि इस तर्क से हार मानकर या "क्यों" मंत्री जी ने इस मामले में चुप्पी साध ली। चौखट के बाहर मन्त्री ने ज्यों ही पैर रखा, पकौड़ी साह बोले, "देखा मुनीम जी ? भाग्य इसे कहते हैं कि बड़े-बड़ों की बोलती बन्द कर दें। राम-कृपा से जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय, बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय।

मुनीम जी ने गरदन हिलाते हुए कहा, "बेशक अब पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं।"

मिट्ठू गुनगुनाते हुए आ रहा था, "दौड़ो दौड़ो हनूमान कलयुग बड़ा दुख देता बेईमान.....।" सहसा उसके कानों में मुनीम की अस्पष्ट आवाज पहुँची।

उसकी 'मलिकाइन' ने कहा था, "एक छटाँक भी घी नहीं है—मालिक से कहकर घी खरीद ला", और उसने सुना—मुनीम जी उसके मालिक पकौड़ी साह से कह रहे हैं 'अभी पाँच सेर घी मटका में है।' इस झूठ पर उसके शरीर में आग लग गयी। उसने बिगड़कर कहा, "देखिये मालिक, झूठ बोलते हुए मुनीम जी की जुबान तनिक नहीं लटपटाती।"

मुनीम ने गरज कर कहा, "देख लीजिये साव जी, इसकी हड्डियाँ हमेशा लड़ने के लिये फड़फड़ाया करती हैं।"

पकौड़ी साह ने कहा—'मिट्ठू'!

मिट्ठू ने उन्हें आगे कहने का मौका न दिया। बोल उठा, "बस मुनीम की जुबान मैंने पकड़ ली। मालिक! मलिकाइन से पूछकर "दूध का दूध और पानी का पानी" इन्साफ कर दीजिये। आइये···बाप रे बाप! घर में सूँघने के लिये घी नहीं और यह कहते हैं "पाँच सेर घी मटका में है।"

मुनीम ने दाँत तले जीभ दबा ली।

पकौड़ी साह बिगड़ उठे—"मूर्ख कहीं का! झूठ मूठ आकाश सिर पर उठा रहा है···" मिट्ठू आवेश में घर के भीतर घुसा।

'उल्लू! पाजी! गदहा!' कहते हुए पकौड़ी साह ने उसका पीछा किया।

ऊँट के गले में बकरी

मिट्ठू की मालकिन ने देखा, मिट्ठू सोडावाटर की तरह आवेश में भरा है और उसके पति होने का प्रमाण-पत्र रखनेवाले पकौड़ीसाह गालियों का दान करते हुए, अपने थुल-थुल शरीर को असाधारण गति से हिलाते आ रहे हैं। वह आश्चर्य में भी गई, "क्यों क्या बात है?"

वाक्य का अंतिम अंश इधर मुँह से निकला और उधर मिट्ठू सुर में सुर मिलाता हुआ बोल उठा—"बस समझ गया' झूठों का ही जग में राज है। 'चोर का मुँह चाँद जैसा।' मालकिन! आपने ही हुक्म दिया, मिठुआ, घी ले आ, छटाँकों भर भी मटका में घी नहीं बचा है, और मैं मालिक से इसी बात को दुहराने जा रहा था कि सुना, मुनीमजी साहजी से चुगली खा रहे थे, अभी पाँच सेर घी मटका में है। मैंने उनकी बात का विरोध करते हुए कहा, "झूठ! एकदम झूठ! तो परिणाम हुआ, मालिक लाल-पीले होकर मुझ पर टूट पड़े।"

पकौड़ी साह ने दाँत किटकिटाते हुए कहा, "गधा कहीं का!" मिट्ठू झट अंगुली हिलाने लगा, "देखिए, देखिए, इनका न्याय! अब तक मैं दो पैर का आदमी था परन्तु सच बात कहने से चार टाँग का गधा हो गया। साहजी, यह सब आपकी नजर का दोष है।

—आप बगुला जैसे मुनीम को सियार के समान चालाक समझते हैं, परन्तु हमारी बात को याद रखने के लिये अपनी धोती में गाँठ लगा लीजिए, एक दिन वह टूटी हुई नाव की तरह पानी में बैठ जायगा।"

"मूर्ख!"—पकौड़ी साह का क्रोध कोशी नदी की बाढ़ के पानी सा बढ़ता ही गया।

मिट्ठू के शरीर की बोतल का मुँह खुला और उसमें भरा हुआ जोश इस प्रकार निकलने लगा—

"क्या कहा आपने? जरा फिर से तो कहिए! मैं मूर्ख हूँ? उस दिन मैं मूर्ख नहीं था जब आप मुजफ्फरपुर से पटना जा रहे थे और ट्रेन में स्थान की कमी के कारण लोग आपकी तोंद को दबा रहे थे। उस समय मैंने कैसी चालाकी से आपके डूबते हुए प्राण को तिनके का नहीं, बाँस का सहारा दिया था! क्या वह दिन भूल गये? मालकिन! आप भी उस दिन की घटना को सुनकर संतोष कर लीजिए!

"मैंने सांस लेने में भी मालिक की कठिनाई देखी! एक युक्ति सूझ गई। झट मालिक के कान के पास मुँह ले जाकर मैंने कहा— "दारोगाजी! घबड़ाइये मत, सन्तोष का फल मेवा। शिकार हाथ में आ गया है। सोनपुर स्टेशन पर कांस्टेबल की सहायता से इन्हें गिरफ्तार कीजिएगा जिसमें वह किसी प्रकार निकल न सकें, बाज के चंगुल में बटेर की तरह पड़े रहें।

"मेरी बात सुन कर सावजी जापानी के सामने भूटानी बन

गये ! मैंने उनको विस्मय से अवाक अपने मुँह की ओर ताकते देखकर, उनका हाथ टीप दिया। बोला—बाप रे, उन्नीस सौ बयालीस के आन्दोलन के बाद अभी नजर के सामने आये हैं। हमलोग सादी पोशाक पहने, इनकी खोज में धूल फाँकते फिरे, परन्तु वाह री किस्मत ! आज परिश्रम सफल हुआ। तार काटना, डाक घर लूटना, स्टेशन फूँकना, इन्कलाब जिंदाबाद के नारे लगाना, प्राण का मोह त्याग, भरी हुई बन्दूक के सामने अकड़कर खड़ा हो जाना, बस, एकदम फाँसी की सजा होगी क्यों दारोगाजी !

"इस बार साहजी मेरी धूर्त्तता ताड़ कर बोले—"बेशक, बेशक ! अपील के लिए भी गुंजाइश नहीं।

"मैंने यात्रियों को घूरकर कहा—फोटो से चेहरा मिलता है न ?"

"साबजी ने झट उत्तर दिया—'एकदम।"

"बस, सोनपुर तक आप 'शीत-वसंत' कुछ न कहिए !"

"अरे भाई, कसम खिला लो, जो एक शब्द भी मुँह से निकल जाय।"

"चाहे आपकी तोंद पर भी क्यों न बैठें !"

"अरे, यह मेरे सिर पर भी बैठ जायँ तब भी जुबान नहीं हिलाऊँगा। इनकी सौगन्ध !"

"परन्तु एक काम करना कभी मत भूलिए। अगले स्टेशन पर सोनपुर स्टेशन-मास्टर के नाम तार दे दीजिए कि वहाँ जैसे

ही गाड़ी रुके कि पलक गिरने से पहले पचासों गोरा संगीन के साथ हमारे डिब्बे को घेर लें!

"यह तूने खूब कहा। जिससे फरार भागने न पायें।"

"बस-बस। हुजूर का बेटा जिये। तनिक सँभलकर बैठ जाइए।"

हमारी इतनी बातें सुनकर यात्रियों के चेहरे का रंग काफूर हो गया। एक ने पूछा—किसी के नाम वारंट है क्या? मैंने झट गरजकर कहा—"वारंट? अजी, सोनपुर स्टेशन तो आने दो तब मालूम हो जायगा कि इस डिब्बे की कैसी हालत होती है और हमलोग कौन हैं?"

"इसी समय भगवानपुर स्टेशन आया। गाड़ी रुकी और सभी यात्री भरभराकर उतरने लगे। हमने कहा—आपलोग अपने-अपने स्थान पर पहाड़ की तरह बैठे रहें और प्रार्थना है, सोनपुर तक चलने की अवश्य कृपा करें! सभी हमारा मुँह देखने लगे।"

मैंने लालजी से कहा—"उस दिन गोंइठामल जालियाँवाला बाग का किस्सा कह रहे थे, आज तो सोनपुर उससे भी बढ़ जायगा?"

"एँह, उससे बढ़कर।"—वे बोले।

"और आप तो दारोगा से लाट बना दिये जायँगे।"

"लाट ही क्यों, उससे भी ऊपर।"

"अब तो सभी का पेट पानी हो गया। रहा-सहा साहस भी

आता रहा। रोकने पर कितने दाँत दिखलाने लगे और कितने चुपके से 'नौ-दो-ग्यारह' हो गये। तीन मिनट के बाद उस लम्बे-चौड़े डिब्बे में केवल हम दोनों ही रह गये थे।—

"अब आप ही इन्साफ कर मालकिन कि मैं मूर्ख हूँ ?"

इसका उत्तर न देकर उसकी मालकिन पकौड़ी साह से बोली—"मैं समझ नहीं पाती तुम क्यों इस गरीब के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हो। रात-दिन शोरगुल। बात-बात पर बुरी-बुरी गालियों की बौछार ! यह सब मुझे पसन्द नहीं।"

पकौड़ी साह अपशब्द का दुर्व्यवहार करते-करते थककर कुरसी पर धम्म से बैठ गये थे। इस बार अपनी पत्नी की फटकार सुनकर फिर बाग्-युद्ध के लिये प्रस्तुत हुए।

"बस, कह चुकी या और भी कुछ कहना बाकी है ?"

"बुद्धिमान के लिए एक इशारा ही काफी होता है।"

"क्या मैं मूर्ख हूँ ?"

"मैं नहीं जानती।"

"गोंइठामलजी बिना मुझसे राय लिये एक कदम नहीं चलते।"

"चलते होंगे !"

"तुमको विश्वास नहीं होता, बुलाऊँ गोंइठामल को ?"

"मान गई, तुम बहुत बड़े बुद्धिमान हो। सब कोई अपने को तीसमार खाँ समझने में नहीं चूकते, तुम किस गधे से कम हो।"

"कलयुग नहीं, भ्रष्टयुग है।"—कह कर पकौड़ी साह ने अपने माथे पर 'चटाख' से एक हाथ दे मारा। फिर पृथ्वी की ओर देखते हुए महान वक्ता की तरह बोले—

"एक वह भी समय था जब स्त्रियाँ अपने पति के साथ बन-बन की धूल फाँकती थीं, नीम की पत्तियाँ चबा-चबाकर पति देवता की सेवा करते-करते जीवन के पहाड़ से बड़े-लम्बे दिनों को भथुआ की तरह काट देती थीं। इतना ही नहीं, पुरुष की मृत्यु पर स्वर्ग में भी उनकी मजदूरी करने के लिए जीते-जी चिता की आग में मछली की भाँति तड़प-तड़पकर शरीर को राख बना देती थीं। परन्तु आज? यह कलियुग की भवानी है जो अपने पति को देवता समझना अलग, आवारा पिल्ला समझकर दुरदुरा रही है।"

मिट्ठू की मालकिन के हृदय के भीतर की आग अवसर पाकर ज्वालामुखी की भाँति भड़क उठी। वह तड़पकर बोली—"सूखे मिरचा! ईमान को पास रखकर बातें करो! तुम क्या यह चाहते हो कि स्त्रियाँ बकरे की भाँति कसाई पुरुष की छुरी के नीचे गरदन रख दें, कुआँ की मेढ़की की तरह घुट-घुटकर, घुल-घुलकर, सिसक-सिसक कर अंधकार को भेंट चढ़ जायँ? परन्तु विरोध में एक शब्द न निकालें? पिंजरा में बंद रहकर भी वह कहती जायँ, पति ही व्रत है, पति ही तप है"! अब मुझसे ऐसी आशा मत रक्खो!

पकौड़ी साह ने आँखें फाड़-फाड़कर उसे निहारते हुए अपने

सिर को सहलाते-सहलाते कहा—'मैं जान गया हो राजा तोहर चतुरइया।' बस, जिस बात का सन्देह मेरे मन के सागर में कछुआ की गरदन की तरह निकलता था, अब गोह की तरह सामने आ गया। अब मैं भली भाँति समझ गया कि तुम मठुआ के पक्ष में क्यों जान लड़ाया करती हो।

"सन्देह और अविश्वास के लिए ही तो साठ वर्ष के बूढ़े सोलह वर्ष की युवती का हाथ पकड़ते हैं।"

पकौड़ी साह अपनी पत्नी का उत्तर सुन छिछली गड़ही की तरह पानी का वेग पाकर अपने से बाहर हो गये।

"मैं बूढ़ा हूँ। एक बार नहीं, हजार बार सही, तुम फिर कह सकती हो, मैं बूढ़ा हूँ। परन्तु संसार क्या, तीनों लोक में कौन से ऐसे माँ के लाल ने जन्म लिया है जो मेरे इस दावे को अस्वीकार कर दे, यदि भरी हुई जवानी वापिस लाने का प्रयत्न कर "जो जाके न आये वह जवानी देखी और आके न जाये वह बुढ़ापा देखा" वाली कहावत को असत्य प्रमाणित करनेवाले रोगी, अफीमची के जैसे, चश्माफारी मूँछ मूँड़े युवकों पर मैं भूल से भी अपने हाथी के जैसा शरीर का बोझ डाल दूँ ता उन्हें छठ्ठी का दूध याद न हो जाय। हाँ, तुम उमंगों से भरी, शराब सी नशीली, गुलाल की कली हो—तो मुझे क्यों दोष देती हो?

"तुम्हें अपने माँ-बाप से यह प्रश्न करना चाहिए कि क्यों उन्होंने हमारे जैसे सेठ के घर में तुम्हें दूध का कुल्ला करने के

लिये डालकर घोर अन्याय किया ? सियाराम ! सियाराम ! युग बदल गया। क्या वह दिन तुम भूल गई ? जब तुम्हारा बाप, झोपड़े का राजा, किसी भले आदमी के लड़के से तुम्हारा सम्बन्ध करने के विचार से, जिसके द्वार पर जाता था—उससे तीन हजार, चार हजार रुपये से कम दहेज में न माँगे जाते थे। वह बदहवास होकर, अपनी असमर्थता दिखलाते हुए केवल 'पानफूल' देकर ही सम्बन्ध स्वीकार कर लेने की दुहाई देता फिरता था और फटे हुए रद्दी कागज की तरह बाहर फेंक दिया जाता था।

"याद करो, जब वह चिंता के बोझ से दबकर आत्महत्या करने पर उतारू हो गया था—हमने तुमसे शादी करने का बंधन देकर उसके प्राण बचाये। इस उपकार के बदले यदि दूसरी कोई स्त्री होती, प्रतिदिन हमारा चरण धो-धोकर पीती और कहती—

"मेरे तो तू ही गोपाल, दूसरो न कोई" परन्तु हाय रे दादा, तुम हो जो आज इस तरह हमारे दिल की दुनिया में परमाणु बम का प्रयोग करने में तनिक भी संकोच नहीं करती। सच कहा है रामायण में तुलसी बाबा ने 'ढोल गवार शूद्र पशु नारी·····

मिठू की मालकिन बाज की तरह झपटकर पकौड़ी साह के मुँह से फर-फर निकलती हुई बात की चिड़िया छीन ले गई।

"तुम्हारे तुलसी बाबा भी तो पुरुष ही थे। युग-युग से पुरुष

नारी को अत्याचार सहने के लिये प्रोत्साहन देता आया है—इस पुण्य को लूटने से भला वह क्यों वंचित रह जाते ? हाँ, इस बात को अस्वीकार करने का हठ कोई नहीं कर सकता कि पृथ्वी पर आने के साथ लड़की अपने संग, पिता और स्वजनों के लिए चिंता, दुःख और न जाने कितने अज्ञात अभिशापों का बोझ लिए आती है। दहेज···" कहते-कहते वह रुक गई। उसकी आँखें क्रोध से पके टमाटर की तरह लाल हो गईं। वह पटाखे की तरह फूट पड़ी, "जीते-जी कीड़ा पड़े उनके शरीर में जो पशु की भाँति अपने लाड़ले पुत्रों का मोल करते हैं। कोढ़ फूटे उनके मुँह में जो बेटे की शादी में पतोहू के घरवालों को संकट में डालकर दहेज वसूलने में कसाई के भी कान काटते हैं और आग लगे इस विषैले फोड़े की तरह दूषित हिन्दू जाति में जो भैंस की तरह नींद में खर्राटे लेती हुई इस अन्याय को चुपचाप सहती जा रही है।·····

"भगवान भी शायद मर गया है जो कभी एक अबला की करुण पुकार सुन कर नंगे पाँव दौड़ा आता था, अब इस विज्ञान के युग में लाखों-करोड़ों अबलाओं के आँसुओं की धार बहाने पर भी किसी वायुयान पर नहीं आता, और अत्याचारियों पर न कोई देशी बम ही भड़कता है।..."

"नास्तिकता ! घोर नास्तिकता !! अरी, पापिन, कुशल चाहती है तो भगवान के विरोध में जुबान हिलाने के पाप की क्षमा माँग ले। नहीं तो, भगवान के कोप से कामदेव की

तरह जलकर भस्म हो जायगी।"—पकौड़ी साह चिल्ला उठे।

"अरे मिठुआ! महोखा कहीं का! उल्लू की भाँति टुकुर-टुकुर हमारा मुँह क्यों देख रहा है? जा ठाकुरजी के घर का दरवाजा खोल दे! तुम्हारी मालकिन शिवजी की मूर्ति पर नाक रगड़कर अपने पापों से छुटकारा पायँगी।"

मिठू, जर्मनी और ब्रिटेन के युद्ध में पराजित फ्रांस की तरह चुपचाप था। अब पकौड़ी साह की आज्ञा पा साहस की आगे बढ़ा।

इसी समय उसकी मालकिन दहाड़ उठीं—"अरे, तुम्हारे ठाकुर जी को चूल्हे में झोंक दूँगी जो तुम्हारे जैसे ऊँट के गले में हमारी जैसी बकरी को बाँधते हुए देखता रहा और न सकुचाया, नहीं विरोध किया।"

पकौड़ी साह अपने दोनों हाथों को आकाश की ओर उठाकर चिल्ला उठे—त्राहिमाम्! त्राहिमाम्! हे क्षीरसागर में सोने वाले भगवान्! इस बूढ़े की डूबती हुई नौका को बचा लो! "मार्ग में भरदूल का अंडा, घंटा टूट पड़ा, मेरे साथ भी ऐसा ही व्यवहार हो।"

इसी समय मिठू भय और विस्मय से चीख उठा, "साव जी।"

पकौड़ी साह ने भी सुना—'अरर धम्म्।' चौंककर उसने दृष्टि जो घुमाई तो देखा, 'काक की चोंच में अंगूर खुदा की कुदरत' वाली कहावत चरितार्थ करने वाली उसकी पत्नी कटे वृक्ष की भाँति चारों खाने चित्त हो गई है।

घर भर में कुहराम मच गया। एक ओर से पड़ोस में रहने वाले मियाँ नसरल्ली बुलाये गये, दूसरी ओर से बिलाई ओझा नस्य सूँघने आ धमके।

मौलवी ने कहा, "जिन्न ने इसकी खूबसूरती पर लट्टू होकर इसे धर दबाया है।"

ओझा ने कहा, "ब्रह्म पिशाच ने लहू सोखने के लिये पकड़ा है।..."

इसी बात को लेकर मौलवी और ओझा में चखचख हो गई। दोनों अपनी-अपनी बातों पर मिस्टर जिन्ना की तरह अड़े रहे। बात 'तिल से ताड़' बन गई। दाढ़ी—चोटी—संग्राम होते होते बचा। परन्तु वाह री पकौड़ी साह की किस्मत!

उनकी पत्नी की मूर्च्छा बिना झाड़-फूँक के ही भंग हो गई!

परन्तु चलते समय मौलवी नसरल्ली पकौड़ी साह को चेता गये, जिन्न हमें देख कर अभी भाग गया है परन्तु जब तक मुनासिब भेंट नहीं पायगा वह छूट-छूट कर जुट जायगा।

जाते-जाते बिलाई ओझा भी समझाते गये, "सावजी, ब्रह्म-पिशाच हमारे मंत्र के प्रभाव की कल्पना-मात्र से सहुआइन की देह से हट गया है परन्तु जब तक लोहू के बदले शराब नहीं पीयेगा और बकरा नहीं खायगा तब तक खटमल की तरह सताता ही रहेगा।

उस रात्रि में, भूत का सपना देखते-देखते मिट्ठू घिघियाने लगा—"दादा रे दादा, प्राण निकला, हाय गोसाईं...।"

पकौड़ी साह भी उस रात को नींद से चौंक-चौंक उठते थे। कभी-कभी स्वप्न देखकर बड़बड़ाते भी थे। मिट्ठू की भयोत्पादक आवाज 'गोजर' बनकर उनके कानों में घुसी और वह तड़प कर कमरे के बाहर भागने के लिये मार्ग ढूँढ़ने लगे।

कमरे में जलता हुआ दीपक तेल के अभाव में न जाने कब बुझ चुका था। अंधकार में वह मिट्ठू से टकराये और लड़खड़ा कर बैंगन की तरह लुढ़क गये।

मिट्ठू चिल्ला उठा—"बाप रे, मार डाला।"

प्रातःकाल पकौड़ी साह अपने पड़ोसियों से कह रहे थे, जब मैं कमरे से बाहर निकलने लगा, जिनने हमारे पैर को पकड़ कर खींचा और मैं बहुत सँभालने पर भी बेल की तरह भद से गिर पड़ा।

और गाँव भर घूम-घूम कर मिट्ठू कहता फिरता था, ब्रह्म-पिशाच ने अपनी मोटी अँगुलियों से मुझे खोदा और छितनी बराबर अपने पाँव से मुझे दबाया। परन्तु राम कहिये जो अपने माता-पिता के पुण्य-प्रताप से मैं बाल-बाल बच गया और अभी आप पंचों के सामने टनाटन बोल रहा हूँ। लाख रुपये की बात कही सूराखी मियाँ ने, जा को राखे साइयाँ मार न सकिहैं कोय·····।

———

मर्जी गोविन्द की !

दूसरे दिन, मिट्ठू बगीचे में, किसी के हाथों से निकले हुए दिल को नहीं खोज रहा था, उसे अपनी स्वामिनी के उन्माद रोग में ब्राह्मी बूटी लाने का आदेश उसके स्वामी की ओर से मिला था और वह अपने राजा की आज्ञा पर प्राण न्योछावर करनेवाले जापानियों की तरह पकौड़ी साह की आज्ञा पर आकाश फोड़कर, पाताल तोड़कर, बूटी लाने का संकल्प कर चुका था।

बिल्ली को सिकहर टूटने से, लोमड़ी को अंगूर मिलने से जितनी प्रसन्नता मिलेगी उससे अठगुना हर्ष मिट्ठू को अपने प्रयत्न में सफल होने पर हुआ।

जिसकी खोज में वह सुबह का निकला हुआ, दोपहर और तीसरे पहर को लाँघकर सन्ध्या समय उस पार जाते हुए लाल-लाल सूर्य को देख रहा था, वही ब्राह्मी बूटी हँसती हुई उसके आँखों के सामने थी।

उसने बूटी उखाड़ने के लिये ज्यों ही हाथ बढ़ाया कि ठीक उसी समय उसके कानों में कुत्ते की आवाज सुनाई पड़ी—'भूँ'।

जैसे यात्रा के समय कोई छींक दे, 'आकछो' और यात्रो··· अपशकुन मानकर सहम जाय वैसे ही मिट्ठू सहम कर रुक गया।

'अरे !' भय से मिट्ठू की जान सूख गई।

बाघ के समान, लम्बा-चौड़ा झबरा कुत्ता एक सियार पर झपटा था। सियार सिर पर पाँव रख कर भागता हुआ मिट्ठू के बिलकुल पास से होकर एक ऊँख के खेत में घुस गया और कुत्ता उसे वहाँ न पाकर इधर-उधर सूँघकर मिट्ठू की ओर देखने लगा।

मिट्ठू घबड़ाकर चिल्ला उठा, 'मेम साहब !'

कुत्ते की मालकिन मेम साहिबा कुछ दूर पर खड़ी थीं।

मिट्ठू ने सुना, 'भूँ।'

वह भयंकर कुत्ते के नुकीले दाँतों से अपनी रक्षा के लिये मेम साहिबा का आश्रम लेने का निश्चय कर सरपट भागा और उसे भागता देख कुत्ते ने उसका पीछा किया।

मिट्ठू ने अपने पास, बिल्कुल पास कुत्ते की आवाज सुनी, "भूँ, भूँ, भूँ।"

वह लपककर मेम साहिबा के पीछे खड़ा हो गया।

मेम साहिबा ने कुत्ते को डाँटा—"जॉन ! जॉन !!"

मिट्ठू ने समझा, मेम साहिबा कुत्ते को डाँट रही हैं, "मान ! मान !! याने मेरा कहना मान और मिट्ठू को अपने नुकीले दाँतों से न काट ! परन्तु कुत्ते ने मेम साहिबा का कहना न माना और मिट्ठू के पीछे कमर के पास फिर आवाज हुई, 'भूँ-भूँ।'

मिट्ठू को मालूम हुआ जैसे अभी-अभी कुत्ते के तेज दाँत उसके चूतर के मांस में घुसना ही चाहते ह और वह घबड़ाकर

मेम साहिबा से चिपट गया,—"मेम साहिबा ! मेम साहिबा !!" मेम साहिबा घबड़ाकर बोली—"छोड़ो ! छोड़ो !!"

मिट्ठू, मेम साहिबा के शरीर से जोंक की तरह चिपटा हुआ कुत्ता के आक्रमण से बचने के लिये उनको ढाल बनाकर हर भूँ-भूँ शब्द पर चिल्ला उठता—

"मेम साहब! मेम साहब !! पकड़िए जल्दी, इस बदमाश ससुर को ! नहीं तो बाप रे, एक ही कौर में सवा सेर मांस निकाल लेगा !"

और जब तक मेम साहिबा कुत्ते को पकड़ नहीं पायीं तब तक मिट्ठू के मजबूत हाथों में ढाल बनी हुई भादो की भरी नदी में लहरों के बीच पड़ी हुई छोटी नौका की भाँति डगमगाती रही।

मिट्ठू, कुत्ते को मेम साहिबा के कब्जे में देखते ही अलग जा खड़ा हुआ।

चूने सी चमकीले रंगवाली मेम साहिबा के गाल क्रोध से सेव की तरह लाल हो रहे थे।

"डैम ब्लडी"—वह चिल्ला पड़ी।

मिट्ठू ने समझा, मेम साहिबा कह रही हैं, 'जान बचा दी। उसने झट उत्तर दिया, "जरूर, जरूर ! आज जो आप नहीं होतीं तो बाप रे, यह साला पिल्ला हमारी अंतड़ियाँ बाहर खींच लेता।"

'स्टूपिड !"—मेम साहिबा बादल की तरह गरज उठीं।

मिट्ठू ने खाक-पत्थर कुछ भी नहीं समझा। उसने विस्मय से पूछा, "अयँ, आपने क्या कहा ?"

"फूलिश" वह बिजली की तरह तड़प उठी।

मिट्ठू मुस्कराते हुए बोला, बस इतनी-सी बात के लिए गले की नस तोड़ रही हैं। कोई बात नहीं, आपको फूल चाहिए तो कल मैं दो दौरी फूल आपके बँगला पर पहुँचा जाऊँगा। आपकी सौगन्ध! आप सूर्य भी नहीं देखने पायँगी और मैं पहुँच जाऊँगा।"

"डंकी-मंकी!" कहकर मेम साहिबा ने क्रोधपूर्ण नजरों उसे निहारते हुए अपना मार्ग पकड़ा।

मिट्ठू समझ न सका कि उसके वादा करने पर भी मेम साहिबा क्यों रुष्ट दीख रही हैं। उसने कहा, "जाइए अहीर बुझावे सो मर्द।"

कुछ दूर जाने पर उसने देखा, 'झबरा कूकूर 'कूँ कूँ' बोलते हुए मिस साहिबा के शरीर पर उछल-उछल कर चढ़ रहा है और वह प्यार से उसे पुचकार रही हैं। उस कुत्ते के प्रति ईर्ष्या ने मिट्ठू के हृदय में घर बना लिया। वह विचार-सागर में डुबकी लगाने लगा।

"मेम साहिबा के कुत्ते को न किसी वस्तु की चिंता और नहीं नमक के लिए भीड़ में घुसकर धक्के खाने का भय, नर्म-नर्म गद्दे पर सोना, दूध के साथ पाव रोटी चाभना, मेम साहिबा का मीठा प्यार पाना, बाप रे, कितना अच्छा जीवन है।.....

"यदि पकौड़ी साह मुझे भी कुत्ता समझते ?" सहसा उसकी आकृति बदल गई। "अरे, समझते क्या, समझना ही पड़ेगा। आज मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा कि कृपा कर आज से आप मुझे आदमी समझने की भूल न करें। मैं आदमी नहीं कुत्ता हूँ।"

"एक दिन वह मुनीम जी से कह रहे थे, "बड़े भाग्य मानुष तन पाया" यदि इसी मंत्र के प्रभाव से वह मेरा निश्चय बदलने का प्रयत्न करेंगे तो मैं कहूँगा—यह मंत्र किसी घोंघा वसन्त को पढ़ाइए। यदि आदमी होना किसी बड़े पुण्य-प्रताप का फल है तो इसका आनन्द आप ही उठाइये और मुझ गरीब को साहब के कुत्ते की तरह जिन्दगी गुजारने दीजिए।

दूध न सही, पकौड़ी साह दाल-भात भी तो खिलायेंगे और मेम साहिबा की तरह प्यार न करेंगे तो सूखे बैगन की भाँति मुँह सिकोड़कर गालियों की बौछार करने से जी तो चुरायेंगे !

सहसा पकौड़ी साह के मकान के सामने भीड़ में कई लाल पगड़ियों को देखकर उसका माथा ठनका। उसने उछलते हुए हृदय को सँभाले आगे बढ़कर देखा पकौड़ी साह के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं और एक दारोगा उनसे कुछ प्रश्न कर रहा है।

एक दर्शक से कारण पूछने पर ज्ञात हुआ, चार रुपये की धोती, पकौड़ी साह ने बारह रुपये में दी है।

× × ×

पकौड़ी साह ने अपराध स्वीकार कर लिया। एस० डी० ओ० साहब ने कृपा कर, उन्हें तीन मास के लिए बिना किराये

के मकान में रहने की आज्ञा दे दी और लाइसेंस रद्द कर, कपड़ा बेचने के कष्ट से मुक्त भी।

एक दिन, पकौड़ी साह के मुनीम, गोंइठामल से कह रहे थे, दारोगा ने डेढ़ सौ जेब में रखकर कहा था, अपराध स्वीकार कर लीजिएगा, दस-बीस रुपये से अधिक जुरमाना न होगा। पकौड़ी साह···

गोंइठामल उनके मुँह से बात छीनकर बोले—यदि वह अपराध स्वीकार नहीं करते तो कानून के फंदे से निकलने के लिए बहुत कुछ उपाय किया जा सकता था। हमारे एक सम्बन्धी कचूमर मल को ४५) के बदले ७५) में एक बोरा चीनी बेचते हुए ऑफिसर ने पकड़ा था; परन्तु दरभंगा से वकील मँगाकर ऐसी जिरह करायी गयी कि कानून रूपी मुर्गी के पेट से अंडे की तरह साफ बाहर निकल आये।

मुनीम ने कहा—"सच है, परन्तु भाग्य की रेखा को कौन मिटा सकता है? राम कृपा से, कहा है किसी ने," मर्जी गोबिन्द की—चूहा के पेट से निकल जाय बिल्ली।

मिट्ठू ने तुक में तुक मिलाते हुए कहा—हाँ, इसमें क्या संदेह? चाहे "चना के पेड़ में फल जाय भेली।"

नोट—इस उपन्यास का कुछ अंश आल इंडिया रेडियो, पटना से ब्राडकास्ट हो चुका है।